ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -25 | मार्च - II - 2023 | अंक - 24 | माउण्ट आबू | Rs.-12

शुभारंभ : ब्रह्माकुमारीज़ और भारत सरकार के जल शक्ति मंत्रालय के अभियान का प्रधानमंत्री ने किया वर्चुअल शुभारंभ

प्रधानमंत्री ने कहा - जल बचाने के साथ उन विकृतियों को भी दूर करना होगा, जो जल प्रदूषण को बढ़ाती हैं

शांतिवन। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि भारत की आध्यात्मिक संस्थाओं की जल अभियान में बड़ी भूमिका है। बीते दशकों में हमारे यहां एक नकारात्मक सोच बन गई थी कि हम जल संरक्षण और पर्यावरण जैसे विषयों को मुश्किल मानकर छोड़ देते थे। यह सोचते थे कि यह काम नहीं किया जा सकता। बीते आठ साल में यह मानसिकता बदली है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राजस्थान के आबू रोड स्थित ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के शांतिवन के डायमण्ड हॉल में 'जल जन अभियान' का वर्चुअल शुभारंभ करते हुए कहा कि 'नमामि गंगे' अभियान, आज देश के विभिन्न राज्यों के लिए एक मॉडल बनकर उभरा है। आज न केवल गंगा साफ हो रही है बल्कि उनकी तमाम सहायक नदियां भी स्वच्छ हो रही हैं। गंगा के किनारे प्राकृतिक खेती जैसे अभियान भी शुरु हुए हैं।

ब्रह्माकुमारीज़ और भारत सरकार के जल शक्ति मंत्रालय द्वारा चलाया जाएगा 'जल-जन अभियान'

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, जब भी मैं ब्रह्माकुमारीज़ के बीच आता हूँ, आपका स्नेह और अपनापन मुझे अभिभूत कर देता है। मेरा सम्बंध आपसे इसलिए भी खास है क्योंकि स्व से ऊपर उठकर सर्वस्व समर्पित करना आप सभी के लिए आध्यात्मिक साधना का स्वरूप रहा है। आप सबके बीच आना, सीखना, समझना हमेशा से मेरे लिए एक सुखद अनुभव रहा है।

- *08 माह तक देशभर में चलाया जाएगा जल जन अभियान*
- *10 लाख भाई-बहनें बनेंगे अभियान के सारथी*
- *10 हज़ार कार्यक्रम करने का रखा लक्ष्य*
- *10 करोड़ लोगों तक जागरुकता संदेश पहुंचाने का लक्ष्य*
- *5000 जलाशय, कुएं, बावड़ी के संरक्षण का लक्ष्य*
- *50 हज़ार गीता पाठशालाएं जुड़ेंगी*

जल रहेगा तभी कल रहेगा

मोदी ने कहा कि आज़ादी के अमृत काल में आज देश जल को कल के रूप में देख रहा है। जल रहेगा, तभी आने वाला कल भी रहेगा। इसके लिए हमें मिलकर आज से ही प्रयास करने होंगे। उन्होंने संतोष जताते हुए कहा कि जल संरक्षण के संकल्प को देश अब एक जन अभियान के रूप में आगे बढ़ा रहा है। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि ये अभियान एक ऐसे समय में शुरु हो रहा है, जब

हवा, पानी जो परमात्मा ने हमें दी है उसकी कदर करना सीखें

सुप्रसिद्ध अभिनेता पद्मश्री नाना पाटेकर ने कहा कि मैं आज गांव में रहता हूँ लेकिन जब किसी काम से शहर जाना होता है तो मेरा दम घुटने लगता है। हमें आबादी बढ़ने से रोकना होगा, क्योंकि हमारे पास संसाधन सीमित हैं। पानी के बिना जीवन अधूरा है। जो चीज़ हमारे पास है उसकी कीमत नहीं है। वेंटीलेटर पर दो दिन रहो तो हम सात लाख का बिल भर देते हैं लेकिन हवा, पानी जो हमें भगवान ने फ्री में दिया है उसकी हम वैल्यू नहीं कर रहे हैं। मेरा प्रयास रहेगा कि अपने स्तर पर मैं जल संरक्षण की दिशा में जो कुछ कर सकूं, वो कार्य मैं अवश्य करूंगा।

50 साल पूर्व प्रति व्यक्ति 5000 क्यूबिक पानी था जो आज 1500 क्यूबिक मीटर ही मात्र रह गया : गजेंद्र सिंह शेखावत

केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने कहा कि हम दुनिया में तेज़ी से बढ़ने वाली आबादी हैं। हम मानसून के सिर्फ 40-42 दिन बारिश के पानी पर सारा साल निर्भर होते हैं। हम बारिश से मात्र 300 मिलियन क्यूबिक मीटर पानी ही रोक पा रहे हैं। वर्तमान में देश में 750-800 मिलियन क्यूबिक मीटर पानी की आवश्यकता है। पचास साल पहले हमारे देश में प्रत्येक व्यक्ति के लिए 5 हज़ार क्यूबिक मीटर पानी उपयोग के लिए उपलब्ध रहता था जो आज घटकर 1500 क्यूबिक मीटर रह गया है। दुनिया में जितना पीने योग्य पानी है उसका चार फीसदी पानी ही भारत में है और दुनिया की 18 फीसदी आबादी है।

पानी की सुरक्षा में ही भविष्य सुरक्षित: युवराज लक्ष्यराज सिंह

उदयपुर से आये मेवाड़ घराने के महाराज कुमार लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ ने कहा कि हमारे पूर्वजों ने उस समय जल संरक्षण के लिए कई उपाय किए। 21वीं शताब्दी हिंदुस्तान की होगी। लेकिन उसका रास्ता और कहीं से नहीं इसी सोच से गुज़रता है। ब्रह्माकुमारीज़ और जलशक्ति मंत्रालय जो काम कर रहा है वह दुनिया को बनाने का काम है। यदि हमें विश्व पर राज करना है तो सभी को फिर से एक होने की ज़रूरत है।

पानी की कमी को पूरे - शेष पेज 4 पर...

पवित्रता... आपकी पर्सनैलिटी

आज भिन्न-भिन्न जाति, धर्म, रंग होते हुए भी एक बात से सभी सहमत हैं चाहे वो धर्मसत्ता हो चाहे कोई और। चारों ओर दु:ख-अशांति, प्राकृतिक आपदाओं के माहौल के मध्य भी सबकी अंगुली ऊपर की ओर जाती और कहते कि 'हे ऊपर वाले बचाओ'। सब एक बात से तो सहमत हैं कि कोई न कोई सर्वोच्च सत्ता है जिससे हम सबका कहीं न कहीं रिश्ता-नाता है। और हमारे जीवन की सम्पूर्ण आवश्यकताएं उसी ने ही पूरी की हैं। तब तो सबका सिर ऊँचा होता और पुकारते कि अब बहुत हो गया! अब इस धरा पर आ जाओ और हमें सही राह दिखाकर चैन की दुनिया में ले चलो।

अगर वो आ भी जायेगा तो हमें क्या देगा? क्या शिक्षा देगा जिससे हमारे जीवन में सुख और शांति लौट आये? विशेष बात आज हम जो दु:खी हैं, उसका मूल कारण ढूंढने से पता चलता है कि कहीं न कहीं हमारे जीवनशैली में, परस्पर सम्बंधों में, व्यवहार में अशुद्धि की छाया व्याप्त है।

ब्र.कु. गंगाधर

हम सभी की यह चाह है कि इसमें परिवर्तन हो, बदलाव हो। पर बदलाव कैसे होगा, वहां आकर हम सभी रुक जाते। क्योंकि मनुष्य मात्र का यह कार्य रहा ही नहीं। अगर मनुष्य यह कार्य कर सकता तो हमें ऊपर वाले की याद ही क्यों आती! हमने शास्त्रों में भी पढ़ा है, 'सुख-शांति की जननी पवित्रता है'। आज हर कोई सुख, शांति, खुशी की चाह रखता है पर हमारे जीवन में इसका स्थायित्व कैसे हो, ये नहीं जानते। पर जैसे कहा कि जहाँ पवित्रता और शुद्धता है वहां परमात्मा का वास है। सब कोई सुख, शांति, आनंद, प्रेम मांगता, पर कोई ये नहीं मांगता कि हमारे जीवन में पवित्रता हो। जबकि पवित्रता बिना न प्यार है, न प्रेम है, न शांति।

आज हम अशांति और दु:ख के कारण को जड़ से समाप्त करना तो चाहते हैं पर पवित्रता को अपनाने में हमें कठिनाई महसूस होती है। क्योंकि हमारे सामने कोई ऐसा आदर्श नहीं है जहाँ पवित्रता भी हो और जीवनचर्या भी हो। और शर्त ये है कि पवित्रता है तो बाकी सब कुछ है। इसीलिए परमात्मा शिव की इस धरा पर आवश्यकता है ताकि हमें सही व श्रेष्ठ जीवनचर्या का वर दें। और हमें जागृत करें कि पवित्रता का महत्त्व हमारे जीवन में कितना है! पवित्रता से ही जीवन में प्रसन्नता रहती है। बिना पवित्रता प्रसन्नता नहीं। पवित्रता से प्रभु का प्यार भी है और प्रभु का दिया हमें उपहार भी।

आप सोचें, कोई भी महान व्यक्ति व देवी-देवताओं के पास जाते हैं, उनके चित्र देखते हैं तो उनके चेहरे से हमारे चेहरे में भिन्नता महसूस होती है। एक घड़ी भी आप देवी-देवता के चित्र या मूर्ति को ही देखें तो आपको लगेगा कि उनके चेहरे में जो मधुर स्मित की खुशबू है वो हमारे में नज़र नहीं आती। यानी कि हमारे मन में उलझन है, प्रश्न है, इच्छायें हैं, ईर्ष्या है, कहीं न कहीं अप्राप्तियां हैं। तभी तो मन में प्रश्न उठता ही रहता है और मन की बेचैनी बनी ही रहती। तो सभी प्रश्नों का हल, सभी समस्याओं का समाधान, अशांति के कारण, दु:ख का हल अगर एक शब्द में बांधें तो वो है पवित्रता। परमात्मा शिव जब इस धरा पर आते हैं तो सबसे पहले सर्व आत्माओं को पवित्रता का वर देते हैं और स्मृति दिलाते हैं, याद दिलाते हैं, आप सबका निज-स्वरूप पवित्रता है। समय चलते भिन्न-भिन्न आकर्षण, इच्छायें व भोग के वश आपकी पवित्रता का बल लगभग पूरा ही समाप्त हो चुका। जब अपनी चीज़ गुम हो जाती तो बेचैनी होती है ना! और जहाँ बेचैनी है वहां शांति, सुख नहीं भासता। आज हम आपको यही बताना चाहते हैं कि हम अपने जीवन में पवित्रता के महत्त्व को जानेंगे, समझेंगे और जीवन में उतारेंगे तो सुख, शांति और समृद्धि परछाई की तरह आपके साथ रहेगी, कभी भी अलग नहीं होगी। 2023 की शिवरात्रि विशेष रूप में खास है, क्योंकि परमात्मा हमें सबकुछ देने भी आया है और यह संदेश भी लाया कि, बहुत हो गया अब, बच्चे बहुत हो गया। अब, खेल समाप्त हो रहा, अब चलो अपने घर। पवित्रता अपनाओ, सुख-शांति पाओ। अब आप क्या चाहते हैं, ये आप पर छोड़ते हैं...।

ड्रामा का फुलस्टॉप लगाकर बुद्धि को डिस्टर्ब न होने दें

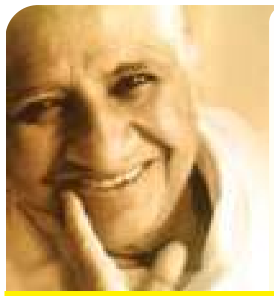
राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

नीति में प्रीति रखो। नियम-संयम को जीवन का श्रृंगार समझो। मर्यादायें हमारे संगमयुग का ताज हैं। जितना उसमें रहो उतना सेफ रहेंगे।

बुद्धि के अभिमान का त्याग, सेवा का त्याग, साथियों का त्याग, अंदर से हुआ पड़ा हो। लेकिन कोई त्यागी माना वैरागी नहीं है। हम आपस में इतने प्यारे भी हैं। बाबा ने कहा है कि हम अकेले आये, अकेले जाना है...लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि हम अकेले मौज करें। यह भी ठीक नहीं। परिवार भी साथ में है। बाबा का बच्चों से प्यार कितना है। कितना प्यार से बाबा आते, हम बच्चों को सजाते, हम बच्चों का भी फिर इतना ही बाबा से प्यार है, इसमें बाबा सर्टिफिकेट देते हैं। मुरली से, सेवा से तो नम्बरवन प्यार है, लेकिन धारणाओं से भी नम्बरवन प्यार हो। सामने देखने वाले हमारी धारणाओं को देखते हैं। तो धारणा भी नम्बरवन चाहिए। हम सभी की पहली धारणा है-पावन बनना। काम महाशत्रु पर विजय प्राप्त करना। बाबा के सिवाए कोई यह दावा नहीं करता कि मैं आया हूँ तुम बच्चों को पावन बनाने। अगर इसी सब्जेक्ट में आप नम्बरवन विजयी हो तो आप सबसे महान हो। इसके लिए दृष्टि, वृत्ति, वायब्रेशन, व्यवहार सबमें बिल्कुल पावन बनो। ऐसे पावन रहो जो दूसरों को भी पावन बनने की प्रेरणा मिल जाए। इसी में ही माया आती। इसी माया को जीतना ही मायाजीत बनना है। कई बार हम आप सबका दिल से यह गुण गाती कि आपने एक बाबा से वायदा रखा है कि मेरा तो एक बाबा दूसरा न कोई। दिल में बाबा को बसाया है। परंतु जब कोई कहाँ थोड़ा भी किसी की अटैचमेंट में आते तो 5 मंज़िल से नीचे गिर पड़ते। जब कोई 5वीं मंज़िल से गिरता है तो रहम पड़ता, तरस पड़ता है, इसके लिए मर्यादाओं को सदा साथ रखो। बाबा ने हम सबको ज्ञान दिया है कि हम आत्मायें भाई-भाई हैं। परंतु यह नॉलेज है कि आत्मा भाई है, दृष्टि भाई की हो लेकिन व्यवहार भाई-बहन का हो। ऐसे नहीं बहन को कहो- आओ भाई जी। व्यवहार में ईश्वरीय मर्यादाओं का नियम रखना पड़ता। अगर नियमों में पक्के रहो तो कभी 5वीं मंज़िल से नहीं गिरेंगे। अगर कोई गिरता है तो पहले मर्यादा का किसी-न-किसी प्रकार से उल्लंघन करता है। वैसे तो बाबा ने हमें बहुत रमणीक गुह्य ज्ञान दिया है, हम उसी में मस्त रहें। लेकिन यह परिवार है, परिवार में हम सभी मिलकर रहते हैं, यह क्लास है। क्लास में एक तरफ भाई, दूसरी तरफ बहनें बैठती, यह भी मर्यादा है। बाबा कहते-आपस में रूहरिहान करो तो यह रूहरिहान क्लास के लिए दी गई है। ऐसे नहीं हम अकेले में बैठकर रूहरिहान करें। माया देखती रहती है कि कहाँ से खिड़की खुली हुई है, उसी जगह से वह प्रवेश करती है। तो माया को आने का मौका न दो क्योंकि अकेले में बैठकर रूहरिहान करेंगे तो थोड़ी-थोड़ी दिल की लेन-देन शुरू हो जायेगी। ऐसे में माया अंदर घुस जायेगी। यह है माया का दरवाज़ा इसलिए नीति में प्रीति रखो। नियम-संयम को जीवन का श्रृंगार समझो। मर्यादायें हमारे संगमयुग का ताज हैं। जितना उसमें रहो उतना सेफ रहेंगे। बाबा ने कभी एक साथ टेबल पर बैठकर भाइयों को खाने की छुट्टी नहीं दी, टेबल पर हँसी-मज़ाक करने की छुट्टी नहीं दी। यह छोटी-छोटी बातें भी ध्यान पर रखना बहुत ज़रूरी है। भल हम आत्मा भाई-भाई हैं, नॉलेज है हम बिन्दु हैं लेकिन नॉलेज के साथ मर्यादायें भी रखना ज़रूरी है।

अपनी स्व-स्थिति की उन्नति का आधार है ड्रामा। ड्रामा कहा माना फुलस्टॉप आया। एक सेकण्ड बीता फुलस्टॉप। यह ऐसी नॉलेज है जो अपने को सदा निश्चिंत रख सकते हैं। ड्रामा की नॉलेज ही हमें निर्मोही बनाती है। हर एक का अपना-अपना पार्ट है, इसलिए किसी के पार्ट से फीलिंग नहीं आती। हरेक की अपनी विशेषता है, अपनी खूबी है। वह गुण देखो, विशेषता देखो तो संस्कार नहीं टकरायेंगे। जो कई बार थोड़ा संस्कारों का टक्कर होता, बुद्धि डिस्टर्ब होती– ड्रामा का फुलस्टॉप लगाकर अपनी बुद्धि को डिस्टर्ब होने मत दो।

अनुभवी बनकर वातावरण को शक्ति दो...

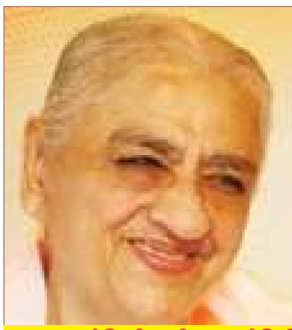
राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

एक है सोचना, एक है अनुभव करना। तो यह अपने से पूछो मुझे आत्मा का अनुभव है? अभी इस बात के अनुभवी बनने का अभ्यासी बनो, बाबा भी कहते इसकी थोड़ी कमी है। अगर अनुभव हो जाये तो वो भूलता नहीं है। बाबा कहते नॉलेजफुल बहुत हैं लेकिन अनुभवीमूर्त नहीं। तो जो भी प्रॉब्लम्स हैं वो कर्म का ही सूक्ष्म रूप हैं, संस्कार का ही परिणाम सामने आता है। इसीलिए बाबा समय प्रति समय हमको आत्म-अभिमानी स्थिति का अनुभव करने के लिए कहता है। ट्रैफिक कंट्रोल करो, माना संकल्पों की ट्रैफिक बंद करके साइलेंस स्वरूप की स्मृति में रहो। साइलेंस स्वरूप तो आत्मा ही है। ऐसे समय व्यर्थ व साधारण संकल्प की तो बात ही नहीं है। अभी बाबा ने 8 बारी ड्रिल की बात कही, वो इसीलिए कहा कि बीच-बीच में बार-बार यह अभ्यास करते रहने से लिंक जुटा रहता है जिससे निरंतर साइलेंस स्वरूप आत्मा का नशा(स्थिति) रहे क्योंकि लिंक टूटा फिर जोड़ा तो इसमें मेहनत भी लगेगी, टाइम भी लगेगा। तो चेक करते रहो और चेंज करते रहो। योग किया या युद्ध किया, यह तो खुद को ही पता पड़ता है। मन के अंदर की गति(स्थिति) क्या है, वो हम ही जानते हैं क्योंकि आत्म-अभिमानी नहीं या मन के ऊपर कंट्रोल नहीं तो हमारा वायदा क्या है? मनजीते जगतजीत कैसे बनेंगे! मायाजीत कैसे बनेंगे! तो जितना समय चाहे मन कंट्रोल में रहे, यह प्रैक्टिस बहुत चाहिए। कर्म-कॉन्सेस की जगह सोल-कॉन्सेस की स्थिति हो।

मन को विन करो तो वन नम्बर में आ जायेंगे। मन की मालिक आत्मा है, तो मन के मालिक बनो तब कर्मेन्द्रियाँ ऑर्डर मानेंगी। तो मैं आत्मा मालिक हूँ, यह स्मृति पक्की हो जाये, नहीं तो वही पुराने संस्कार प्रकट होते रहेंगे, बार-बार धोखा खाते रहेंगे, परेशान होते रहेंगे। तो मतलब अमृतवेले योग का महत्त्व अनुभव में हो। अमृतवेले से लेकर बाबा मेरे लिए आता है, हमारा टीचर हमारे लिए आता है, बाबा वाणी सुनाने हमारे लिए आता है, खास हमारे को पढ़ा रहा है, ऐसे स्वयं को एक योग्य स्टूडेंट समझ करके बैठो। अभी एक सेकण्ड में मैं आत्मा हूँ, उस अनुभूति में रहो...और कुछ नहीं सोचना...।

तो सभी ने अनुभव किया या युद्ध की? इसके लिए रोज़ कोई-न-कोई स्वमान स्मृति में रखो और उसको चेक करो तो अनुभवी मूर्त बनना है। जो हम कहते हैं, उसके अनुभव में रहें। परमात्मा ही हमारा सब कुछ है, यह अनुभव है? तो अनुभवी मूर्त बनेंगी तो सब समस्यायें खत्म हो जायेंगी क्योंकि मालिक बन गये, करनकरावनहार बन गये, तो वो वायब्रेशन वायुमण्डल को पॉवरफुल बनाता है। ऐसे शक्तिशाली वायुमण्डल में जो भी स्टूडेंट आयेंगे उन्हें भी मदद मिलेगी फिर आपका सेंटर देखो कितना उन्नति को पाता है। तो खुद अनुभवी बनके वातावरण को अनुभव की शक्ति दो, स्टूडेंट को हिम्मत दिलाओ अनुभव की।

नियम-मर्यादाओं के प्रतिकूल चलते तो खुशी नहीं होगी

राजयोगिनी दादी जानकी जी

बाबा हम बच्चों को शक्ति भी देता है, खुशी भी देता है। पहले खुश रहने की शक्ति देता है इसलिए सदा खुश। कोई भी ऐसी घड़ी, मिनट नहीं है जो खुश न हो। कारण कुछ है ही नहीं, अगर कारण आता भी है तो देखने के लिए कि यह कहाँ तक खुश है? क्योंकि जब से बाबा के बने हैं, बाबा से खुशी मिली है तब तो बाबा के पास बैठे हैं। सेवा भी करते हैं, खुशी मिलती है। अगर मैं एक सब्जेक्ट में भी वीक हूँ तो खुशी नहीं होगी। योग कम होगा तो खुशी नहीं होगी। धारणा में कोई कमी होगी, जो हमारे नियम मर्यादायें बने हुए हैं, उसके अनुकूल अगर नहीं चलते हैं, कुछ भी मिस किया है तो खुशी नहीं होगी। भले सेवा करेंगे क्योंकि सेवा तो चलते-फिरते कोई न कोई सेवा सामने है पर अन्दर खुशी नहीं है।

ज्ञान क्या कहता है? योग अच्छा हो। ज्ञान है, हे आत्मा अपने को आत्मा समझ परमात्मा बाप को याद करो, बस यह है योग। मैं रिअली आत्मा हूँ... देह के भान से परे। देह, दुनिया यहाँ है, जहाँ रावण का राज्य था अभी हम उस राज्य से निकल आये हैं। बाबा ने वहाँ से निकाल लिया है स्व पर राज्य करने के लिए। स्वयं का स्व पर राज्य है, ईश्वर के बच्चे हैं पर सेवाधारी भी हैं। बाबा ने इतनी अच्छी पुरुषार्थ की सहज विधि सिखाई है कि बीती को चितवो नहीं, आगे की रखो न आश, तो फ्री हो गये। वर्तमान में हैं तो कहेंगे बहुत अच्छा है।

बाबा कितना अच्छा रहमदिल है, फ्राकदिल है, एक ही टाइम में कहता है याद में रहो, योग माना कनेक्शन से माइट मिल जाती है। याद में अचल-अडोल हैं, कोई चिंता व फिकर नहीं, यह अपना अटेन्शन रखना पड़ता है। और योग में बाप, टीचर, सतगुरु वन्डरफुल है। बाबा के हरेक महावाक्यों में बड़ा अर्थ समाया हुआ है। याद में रहो तो विकर्म विनाश होंगे। अभी बाबा का बनने के बाद विकर्माजीत, कोई भूल-चूक करके फिर से विकर्म नहीं करो। फिर भी बाबा कहता है अगर भूल की हो तो बाबा को सच-सच बताओ। बाबा माफ करने में बहुत होशियार है। अगर मैं सच्ची दिल से बात न करूँ, रियलाइज़ न करूँ ना, तो बाबा सजायें भी देता है, सकाश भी देता है, याद भी देता है इसलिए कर्म में सावधान रहना है।

स्मृति से संसार का परिवर्तन

हमेशा ही मनुष्य को स्मृति रहती है। एक स्मृति है जो चेतना में रहती ,दूसरी स्मृति है जो संस्कार के रूप में होती है, जो अर्धचेतन या अचेतन मन में होती है। इन स्मृतियों को काटने के लिए बाबा ने हमें नयी स्मृति दी, श्रेष्ठ स्मृति दी, पॉज़िटिव स्मृति दी। स्मृति को काटने के लिए दूसरी स्मृति दी, उसी का नाम 'योग' है।

संस्कार मनुष्य को कैसे प्रभावित करता है? संस्कार प्रभावित करता है दृष्टि और वृत्ति के रूप में। संस्कार गुप्त चीज़ है, हमें पता ही नहीं पड़ता कि वह कैसे प्रभावित करता है। हम किसी व्यक्ति को वैसी दृष्टि से देखेंगे जैसा हमारा संस्कार होगा। किसी का काम वाला संस्कार होगा तो उसके नेत्रों को संस्कार कामाधीन कर देगा। वह देखेगा तो देह को देखेगा, देह की तरफ आकर्षित होगा। उसकी वृत्ति वासना वृत्ति हो जायेगी, काम वृत्ति हो जायेगी। क्रोधी की क्रोध वृत्ति हो जायेगी और लोभी की लोभ वृत्ति हो जायेगी। इस प्रकार संस्कार दो तरीके से प्रभावित करता है, एक दृष्टि और दूसरी वृत्ति। संस्कार है क्या चीज़? संस्कार है एक गुप्त स्मृति। संस्कार वो स्मृति है जो पहले किये गये कर्मों से जुड़ी है। एक बार किया, दुबारा किया, तिबारा किया और उसकी स्मृति को हम समाते गये। उसको रिफ्लेक्स एक्शन(प्रतिक्षेप क्रिया) कहते हैं। जैसे हम साइकिल चलाना सीखते हैं। उसका संतुलन रखने का ध्यान देते हैं। पहले एक बार चलाते हैं, फिर चलाते हैं, रोज़ चलाना शुरू करते हैं। आखिर वह हमारी स्मृति में बैठ जाता है कि साइकिल कैसे चलाना है। फिर उसको याद करने की हमें ज़रूरत नहीं पड़ती। साइकिल पर बैठने से ही, अपने आप पाँव चलाना शुरू कर देते हैं, हाथ हैण्डल घुमाना शुरू करते हैं। संस्कार ऐसा बन गया है कि जो काम हम बार-बार करते रहे, उसकी स्मृति हमारी चेतना या अर्ध चेतना में नहीं है, फिर भी वह स्मृति में है गुप्त रूप में। वह हमारे ध्यान से ओझल है, फिर भी, हमारी दृष्टि और वृत्ति को प्रभावित करता है। जब तक उसको आप ठीक नहीं करेंगे तब तक आप ठीक नहीं होंगे। उसके लिए बाबा ने हमें क्या तरीका बताया? बाबा ने हमें विचार दिया कि कौन-सा संकल्प-संस्कार अच्छा है, कौन-सा खराब है और संस्कारों को बदलना क्यों ज़रूरी है। इस चीज़ का हमें पता चल गया।

स्मृति में है बहुत बड़ी शक्ति

स्मृति के बगैर कोई भी काम संसार में नहीं हो सकता। कोई भी व्यक्ति नहीं है जिसको कोई स्मृति नहीं है जब तक कि वह मर न जाये।

राजयोगी ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

डॉक्टर्स कहते हैं कि यह मूर्छित है लेकिन फिर भी अन्दर कुछ न कुछ चलता रहा है। उस स्मृति की अभिव्यक्ति बाहर नहीं होती। नींद में भी मनुष्य को स्मृति होती है, यहाँ तक कि वह सपने देखता रहता है। स्वप्न में भी उसको अनेक प्रकार की स्मृतियाँ आती हैं इस जन्म की और पूर्व जन्म की। दोनों स्मृतियों के मिश्रण से मदारी के खेल जैसा स्वप्न उसको आता रहता है। हमेशा ही मनुष्य को स्मृति रहती है। एक स्मृति है जो चेतना में रहती ,दूसरी स्मृति है जो संस्कार के रूप में होती है, जो अर्धचेतन या अचेतन मन में होती है। इन स्मृतियों को काटने के लिए बाबा ने हमें नयी स्मृति दी, श्रेष्ठ स्मृति दी, पॉज़िटिव स्मृति दी। स्मृति को काटने के लिए दूसरी स्मृति दी, उसी का नाम 'योग' है। लोग योग के नाम पर एकाग्रता करने लगे, प्राणायाम, हठयोग करने लगे। उससे कोई जीवन परिवर्तित नहीं हुआ। शरीर ठीक हुआ, चलो अच्छी बात है लेकिन विश्व परिवर्तन की जो बात है, वह हुई नहीं। उससे न अच्छे विचार मिले, न अच्छी स्मृति मिली। बाबा ने हमें यह चीज़ दी कि स्मृति में स्थित रहना ही 'योग' है। योग की कितनी ही किताबें उठाकार आप देख लीजिये। किसी ने भी नहीं कहा है कि 'स्मृति में स्थित रहना ही योग है'। बाबा ने योग की जो व्याख्या दी है, यह दुनिया में अनुपम है, बेमिसाल है।

स्मृति में इतनी बड़ी शक्ति है कि संस्कार में क्रान्ति ला सकते हैं। लोगों ने दुनिया में क्रान्ति लाने की कोशिश की। गोल्डन रेवोल्यूशन, ग्रीन रेवोल्यूशन, व्हाइट रेवोल्यूशन इत्यादि। लेकिन उससे क्या हुआ? संसार में परिवर्तन आया? समाज में सुधार हुआ? क्रान्ति होनी चाहिए मनुष्य का व्यवहार बदलने की, मनुष्य के संस्कार बदलने की, मनुष्य की स्मृति बदलने की। तब जाकर संसार बदलेगा, विश्व में सुख और शांति आयेगी। स्मृति से विश्व में परिवर्तन आ सकता है। बिना स्मृति कोई कुछ कर ही नहीं सकता। बाबा की शिक्षा हमारे संग रहे इसका अर्थ क्या है? बाबा की शिक्षाओं की स्मृति हमें रहे। स्मृति हमारी कितनी बड़ी शक्ति है!

नवा रायपुर से.20-अटलनगर(छ.ग.)। ब्रह्माकुमारीज़ के शान्ति शिखर भवन में आयोजित 'द्वादश ज्योतिर्लिंग दर्शन' का शुभारंभ करते हुए विधायक एवं संसदीय सचिव विकास उपाध्याय, गृह सचिव,आईपीएस अरुण देव गौतम, केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल के महानिरीक्षक साकेत कुमार सिंह, संस्थान की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी व ब्र.कु. सविता दीदी।

छतरपुर-किशोर सागर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा जिला जेल में बंदी भाई-बहनों के लिए त्रिदिवसीय राजयोग शिविर का आयोजन किया गया। इस दौरान ब्र.कु. रीना बहन, ब्र.कु. मोहिनी बहन व ब्र.कु. कल्पना बहन ने आध्यात्मिक ज्ञान, राजयोग मेडिटेशन एवं कर्म सिद्धांत से सभी को परिचित कराया। इस मौके पर जेल अधीक्षक कुलश्रेष्ठ, जेलर राम शिरोमणि पांडे, बंदी शिक्षक उमेश सिंह सहित समस्त स्टाफ व बंदी भाई-बहनें उपस्थित रहे।

जबलपुर-कटंगा कॉलोनी(म.प्र.)। महाशिवरात्रि के अवसर पर 21दिवसीय योग भट्ठी कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए मा.आबू से गायक ब्र.कु. रमेश भाई, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विमला दीदी, समाजसेवी शंकर साहू, म.प्र. विद्युत मंडल के पूर्व डायरेक्टर विजय तिवारी तथा अन्य।

व्यारा-गुज.। शिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए शिल्पा बहन,आईटीआई कॉलेज प्रिंसिपल, नरेश भाई,जेबी हाई स्कूल प्रिंसिपल, साधना बहन,के.के. कदम हाई स्कूल, ब्र.कु. अरुणा बहन तथा ब्र.कु. दीपा बहन।

रतलाम-डोंगरे नगर(म.प्र.)। 87वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती के अवसर पर शिव ध्वजारोहण के पश्चात् प्रतिज्ञा करते हुए महापौर प्रहलाद पटेल, संस्थान की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी, ब्र.कु. अनीता दीदी, नगर परिषद् उपाध्यक्ष पूजा योगी, ब्र.कु. सविता दीदी तथा अन्य भाई-बहनें।

नवी मुम्बई-उलवे। महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए सुमित शर्मा,आईटी प्रोफेशनल, ब्र.कु. शीला दीदी, अंजली कोली,उलवे जिला परिषद हाई स्कूल, ब्र.कु. प्रीति, ब्र.कु. कमला, ब्र.कु. नीलम, ब्र.कु. लक्ष्मी व अन्य।

छतरपुर-किशोर सागर(म.प्र.)। होमगार्ड एसडीईआरएफ द्वारा जटाशंकर पैलेस में आयोजित आपदा मित्र योजना आपदा प्रबंधन प्रशिक्षण में मेडिटेशन सिखाने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ को आमंत्रित किया गया। इस मौके पर ब्र.कु. कल्पना बहन, ब्र.कु. रीना बहन, ब्र.कु. धीरज भाई, होम कमांडेंट करण सिंह, समस्त स्टाफ एवं युवा आपदा मित्रगण उपस्थित रहे।

मुम्बई-भांडुप वेस्ट। महाशिवरात्रि के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित 'द्वादश ज्योतिर्लिंग आध्यात्मिक मेला' का उद्घाटन करने के पश्चात् कमांडर सर्जन दीप कमल ठाकुर,नेवल हॉस्पिटल पवई एनसीएच कॉलोनी एवं कमांडर सर्जन वैदेही ठाकुर,नेवल हॉस्पिटल पवई एनसीएच कॉलोनी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. लाजवंती बहन।

प्रधानमंत्री ने कहा... - पेज 1 का शेष

विश्व में भविष्य के संकट के रूप में देखा जा रहा है। 21वीं सदी में दुनिया इस बात की गंभीरता को समझ रही है कि हमारी धरती के पास जल संसाधन कितने सीमित हैं। इतनी बड़ी आबादी के कारण जल सुरक्षा भारत के लिए भी एक महत्वपूर्ण दायित्व है। उन्होंने कहा कि हम जल को देव की संज्ञा देते हैं, नदियों को माँ मानते हैं। जब कोई समाज प्रकृति से भावनात्मक सम्बन्ध जोड़ लेता है, तो वह उसकी सहज जीवन शैली बन जाती है। हमारे देश में जल जैसे कार्य का नेतृत्व माताओं के हाथों में रहा है। इस दिशा में अब ब्रह्माकुमारी बहनें भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने जा रही हैं। अभियान के शुभारंभ पर प्रधानमंत्री मोदी सहित अन्य अतिथियों के सामने राजस्थान के प्रदेश भर से पहुंचे दस हज़ार से अधिक लोगों ने जल संरक्षण की शपथ ली। साथ ही अन्य लोगों को भी इसे लेकर जागरुक करने का संकल्प किया। कार्यक्रम में संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी, कार्यकारी सचिव ब्र.कु. मृत्युंजय भाई, ब्र.कु. चन्द्रकला दीदी समेत कई लोगों ने अपने विचार व्यक्त किये। संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी ने अतिथियों को सम्मानित किया।

जल-जन अभियान के उद्घाटन कार्यक्रम में...

प्रधानमंत्री मोदी, केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत, मेवाड़ के महाराज कुमार लक्ष्यराज सिंह मेवाड़, सुप्रसिद्ध अभिनेता नाना पाटेकर, प्रसिद्ध कवि एवं लेखक मनोज मुंतशिर सहित अनेक गणमान्य हस्तियां हुईं शामिल

डायमण्ड सभागार में उपस्थित देश-विदेश से आये 15 हज़ार लोगों ने पानी बचाने एवं सभी को इसके प्रति जागरुक करने का लिया संकल्प

'रोटी, कपड़ा और मकान' में जोड़ लें 'पानी' : मनोज मुंतशिर

मुम्बई से आये प्रसिद्ध कवि व लेखक मनोज मुंतशिर शुक्ला ने कहा कि हम बचपन से सुनते आये हैं कि जीवन के लिए कपड़ा, रोटी और मकान ज़रूरी है। लेकिन वर्तमान में इसमें एक शब्द और जोड़ने की ज़रूरत है, वह है पानी। पानी के बिना जीवन अधूरा है। यदि हम ज़रूरत से ज़्यादा पानी का उपयोग कर रहे हैं तो यकीन मानिए हम किसी और के हिस्से के पानी को बहा रहे हैं। पूरे संसार को पेयजल योग्य मात्र 0.5 फीसदी पानी ही उपलब्ध है। हमने आज इसकी कीमत नहीं समझी तो बड़ा मूल्य चुकाना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि हमें अब फौजी की तरह पानी बचाने के लिए लड़ना होगा। जब संसार में एक तरफ पानी खत्म होगा तो ज़िंदगी खत्म होना तय है।

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न-5,आबू रोड, राज. 307510

सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088,

Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक - 240 रूपये, तीन वर्ष - 720 रूपये, आजीवन - 6000 रूपये

Website: www.omshantimedia.org

For Online Transfer

BANK NAME:- STATE BANK OF INDIA(SBI)
ACCOUNT NAME:- OM SHANTI MEDIA
ACCOUNT NO: - 30826907041,IFSC - CODE - SBIN0010638
BRANCH- Prajapita Brahmakumaris Ishwariya Vishwa Vidhyalya,Shantivan

Note:- AfterTransfer send detail on
E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org
OR
Whatsapp, Telegram No.:- 9414172087

राजयोगिनी ब्र.कु. उषा बहन, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

व्यर्थ विचारों के तूफान को कैसे लगायें फुलस्टॉप...!!!

ड्रामा में जितना निश्चय उतनी निश्चिंतता अर्थात् फुलस्टॉप

- गतांक से आगे...

देखा गया है कि व्यर्थ इसलिए चलता है क्योंकि हमारा पुण्य क्षीण हो गया है। इसलिए पुण्य करना ज़रूरी है। तो जितना कर्मणा सेवा हम करेंगे उतना कर्मणा सेवा करते-करते हमारा पुण्य अर्जित होना स्वाभाविक हो जाता है। जैसे-जैसे हम पुण्य अर्जित करेंगे हमारे खाते में जैसे-जैसे आता जायेगा, जमा होता जायेगा तो खुशी बढ़ने लगेगी। हर घड़ी उत्सव मनाओ। हर घड़ी उत्साह में रहो। उसमें कितनी अच्छी बात बाबा ने कही कि जब आप उत्साह में नहीं रहते हो तो परिस्थिति आपके ऊपर वार नहीं कर सकती। बहुत गहराई की बात है कि कैसे परिस्थिति वार नहीं करती है! जब हम उत्साह में होते हैं अर्थात् हमारी फुल स्पिरिट होती है। एक हाई एनर्जी अपने अंदर होती है। जब हाई एनर्जी अंदर में है तो परिस्थिति जब आती है तो वो लॉ एनर्जी, हाई एनर्जी को इफेक्ट नहीं करती, इसलिए कर्मणा सेवा करते हुए हम अपने जमा के खाते को बढ़ायें। बाबा ने तीनों के मार्क्स को एक समान रखा है, बराबर रखा है- मन्सा-वाचा-कर्मणा। ये नहीं कर्मणा का कम है या मन्सा का अधिक है या वाचा का अधिक है, नहीं। उस समय मन्सा सेवा तो संभव नहीं है। जब व्यर्थ इतना चल रहा होता है तो तब हम कोई भी कर्मणा सेवा शुरू करते हैं और हमारा मन जब उसमें पिरोना शुरू होता है तो क्या होगा? अपने आप वो व्यर्थ समाप्त होगा। तो ये है फुलस्टॉप लगाने का पहला तरीका,मन को एक दिशा दो। अपने मन-वचन-कर्म को एक दिशा देना है।

> **जब हम उत्साह में होते हैं अर्थात् हमारी फुल स्पिरिट होती है। एक हाई एनर्जी अपने अंदर होती है। जब हाई एनर्जी अंदर में है तो परिस्थिति जब आती है तो वो लॉ एनर्जी, हाई एनर्जी को इफेक्ट नहीं करती, इसलिए कर्मणा सेवा करते हुए हम अपने जमा के खाते को बढ़ायें।**

दूसरी बात, फुलस्टॉप लगाना माना निश्चयबुद्धि बनना। किसमें निश्चयबुद्धि बनना है? ड्रामा। ड्रामा में हमारा जितना निश्चय हो और वो भी निश्चय क्या होना चाहिए? जो हो रहा है वो भी अच्छा, जो हुआ वो भी बहुत अच्छा, जो होने वाला है वो तो सबसे अच्छा, तो निश्चिंत हो जाना। तो फुलस्टॉप लगाना माना निश्चिंतता का अनुभव करना। जब समय कल्याणकारी है, बाप कल्याणकारी है, ड्रामा कल्याणकारी है तो हमारा अकल्याण करने की ताकत किसमें है? है किसमें? जब ये निश्चय हो जाता है तो भी एक सेकण्ड के अंदर फुलस्टॉप लग जाता है। तो मुख्य बात यही है कि या तो परिवर्तन करने की शक्ति हमारे अंदर आ जाये या दूसरी निश्चयबुद्धि बनकर निश्चिंत हो जाना कि कल्याण हुआ ही पड़ा है। "वाह-वाह" के गीत गाना शुरू करें। "वाह बाबा, वाह ड्रामा वाह, वाह रे मेरा भाग्य वाह!" तो जितना "वाह-वाह" के गीत गाते हैं उतना माना अपनी स्पिरिट को हाई करते हैं।

बाबा कहते हैं कि अगर "वाह-वाह" नहीं भी होगा तो परिवर्तन होकर "वाह-वाह" हो जायेगा। ये भगवान का वरदान है इसलिए "वाह-वाह" के गीत ज़रूर गाना चाहिए। इसको कहते हैं फुलस्टॉप। कोई गाना गाता है तो अपने आप सारी दुनिया भुला हुआ है, है कि नहीं! उस गाने में वो कितना मग्न हो जाता है। जो सारी दुनिया भूल जाती है। ठीक इसी तरह जब हम भी "वाह-वाह" के गीत गायेंगे तो दूसरा सब भूल जायेंगे। तो व्यर्थ समाप्त हो जायेगा और "वाह-वाह" से हर चीज़ "वाह-वाह" होने लगेंगी। तो निगेटिव को कम्पलीट हम पॉज़िटिव में चेंज कर दें। तो ये दूसरा तरीका है फुलस्टॉप लगाने का। फिर देखो कैसे परिवर्तन होता है!

ज़रा सोचें...

अपनी महानता से व्यवहार करें, दूसरों को देखकर नहीं

वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. गीता दीदी,माउण्ट आबू

हमारी पढ़ाई का पहला पाठ - स्व का दर्शन

मेरा अपना और आप सबका भी ये अनुभव तो होगा कि ज्ञान में आते ही बाबा के ज्ञान से 50 प्रतिशत बातें तो खत्म हो गईं। है ना सबका अनुभव! अब पहले जैसी अवस्था तो नहीं बिगड़ती है ना! पहले अवस्था बिगड़ती थी तो रजाई ओढ़कर सो जाते थे। मूड ऑफ हो गया। अब तो शक्तिशाली बनते जा रहे हैं ना! अब स्थिति नहीं बिगाड़नी है। हम ज्ञान का स्वरूप बनें। बाबा की याद से हमें इतना सुख मिलता है, आनंद मिलता है कि फिर हमें और छोटी-मोटी, तेरी-मेरी, मैं-तू, मान-शान की कोई इच्छा ही नहीं रहती। क्योंकि बाबा की याद से ही कितना सुख मिलता है। लेकिन ब्राह्मण बनने के बाद भी तो कितनी बातें आती हैं! अगर हम सावधान न रहें तो हमारे में भी तो कितनी बातें आ जाती हैं। पहले दुनियावी पोस्ट, पोजीशन, धन, रूप, बुद्धि का अभिमान होता था। अब वो नहीं है। पर अब किसी को ज्ञान का अभिमान है, मैं ही अच्छी तरह समझाता हूँ, किसी को योग का अभिमान होता है, किसी को सेवा का अभिमान होता है, सहयोग का अभिमान होता है। पर योगी बनना माना इस दुनिया से न्यारा और बाबा का प्यारा। तो हमें फीलिंग नहीं आयेगी। चलो किसी ने मान नहीं दिया, सेवा का चांस नहीं दिया, फीलिंग नहीं आयेगी। क्योंकि हम अपने स्वमान में हैं, ऊँचे हैं, खुद भगवान हमें इतना प्यार कर रहा है।

तो जितने हम योगी बनेंगे, हमारा संगठन कितना भी बड़ा बन जाये, बड़ा संगठन है तो बड़ी बातें हैं। घर में चार रहेंगे तो कम बातें आयेंगी, अब इतना बड़ा परिवार है तो सोचो दादियों के सामने कितनी बातें आती होंगी! पर जब एक बार स्वीकार कर लिया कि बाबा के बच्चे हैं, हमें मिलकर सेवा करनी है, हमें मिलकर पुरुषार्थ करना है, तो ये छोटी-मोटी संस्कार-स्वभाव की बातें असर नहीं करती हैं। मुझे हलचल का कारण नहीं बनना है, ये पक्का कर लो। मेरे कारण यज्ञ में कोई विघ्न नहीं आना चाहिए। हमें यज्ञ का रक्षक बनना है। यज्ञ को विभाजित नहीं करना है। भगवान ने परिवार बनाया है, हमें तोड़ने के लिए निमित्त नहीं बनना है। यज्ञ शांति के लिए है, यज्ञ पवित्रता के लिए है, यज्ञ विश्व कल्याण के लिए है। यज्ञ माना क्या, ये मकान थोड़े ही, यज्ञ माना हम सभी। हम जीवंत यज्ञ हैं। हमें बाबा के यज्ञ को अखंड, अमर रखना है। जो हम सहयोग कर सकते हैं, हम करें। खुशी से करें, निर्संकल्प होकर करें। बाबा ने कहा है, जो बच्चे समय पर... कौन-सा समय? जब भगवान को हमारे साथ की आवश्यकता है, संगम का समय। इस समय पर भगवान को एक धक से, निर्संकल्प होकर, जो बाबा के मददगार बनते हैं, उनको बाबा अंत तक मदद देने के लिए बंधा हुआ है, और ये सत्य है। इसलिए कितना भी बड़ा संगठन हो, कितने भी वैरायटी, नंबरवार भाई-बहनें हैं, लेकिन एक अटेंशन अगर आपको अपनी स्थिति पर है तो दूसरों के लिए चिंतन नहीं चलेगा। ये ऐसा है, वैसा है, कैसा है, टेढ़ा है, बांका है, जो भी है, जब हम ये सोचते हैं, उस समय हम भूल जाते हैं कि मैं भी कैसी हूँ या कैसा हूँ! मैं भी तो परफेक्ट नहीं हूँ। मेरे में भी तो कमियां हैं। तो जब दूसरों के लिए ऐसा सोचते हैं, मतलब खुद पर अटेंशन नहीं है।

जब बाबा की याद में बैठो तो चारों ओर से न्यारे हो जाओ। बुद्धि से ऊपर उठ जाओ। बाबा के सामने शांति से बैठ जाओ। तो आप आनंद स्वरूप होकर वापस आयेंगे। आत्मा फ्रेश हो जाती है।

हमारी पढ़ाई का पहला पाठ कौन-सा है? खुद पर ध्यान दो, 'स्व' दर्शन करो। पहला पाठ ही बाबा ने ये सिखाया। इसलिए रोज़ अच्छी तरह मुरली की स्टडी करो। बहुत अच्छी तरह बाबा की याद में बैठो। योग में बैठना माना चारों ओर से बुद्धि सिमट जाये। बाबा ने कहा ना, एकरस। कई कहते हैं ना, योग में दो मिनट ऊपर जाते हैं, फिर हम नीचे आ जाते हैं। घड़ी-घड़ी बुद्धि इधर-उधर जाती है। क्योंकि हम डिटैच नहीं हुए, न्यारे नहीं हुए। जब बाबा की याद में बैठो तो चारों ओर से न्यारे हो जाओ। बुद्धि से ऊपर उठ जाओ। बाबा के सामने शांति से बैठ जाओ। तो आप आनंद स्वरूप होकर वापस आयेंगे। आत्मा फ्रेश हो जाती है। पर बाबा के सामने भी शांति से नहीं बैठ पाते हैं क्योंकि दुनिया भर की पंचायत बुद्धि में भरी हुई है। इसलिए अपने को डिटैच नहीं कर पाते। ऊपर गये ही नहीं बाबा के पास, बुद्धि के विमान से यहाँ ही घूमते रहते हैं। इसलिए लाल लाइट से सफेद लाइट होते ही हिलने लगते हैं इधर-उधर। क्योंकि बाबा के सामने प्यार से बैठे ही नहीं। तो जितना ज्ञान-योग क्वालिटी करेंगे, कोई हलचल नहीं आयेगी। फिर वो लौकिक वाले हों, अलौकिक वाले हों, नौकरी धंधे की बातें हों या शरीर की बातें हों, कोई नहीं हिलायेगा।

मुम्बई-घाटकोपर। 87वीं शिव जयंती के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ के योग भवन सेवाकेन्द्र द्वारा आयोजित मेगा 'शिवरात्रि कार्निवल रैली' में राजयोगिनी ब्र.कु. डॉ. नलिनी दीदी,निदेशिका,राजयोग सेवाकेन्द्र,घाटकोपर सबज़ोन, ब्र.कु. निकुंज भाई,प्रसिद्ध स्तंभकार एवं ब्रह्माकुमारीज़ के मीडिया प्रभाग के राष्ट्रीय समन्वयक, राजयोगिनी ब्र.कु. शकु दीदी,अति.निदेशिका,ब्रह्माकुमारीज़ मुम्बई घाटकोपर सबज़ोन, ब्र.कु. विष्णु बहन,वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, स्कूल-कॉलेज के बच्चे, युवा, विभिन्न सामाजिक समूहों के भाई-बहनों सहित अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें शामिल रहे।

बारडोली-रामनगर(गुज.)। 87वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए किरण भाई,कांग्रेस कार्यकर्ता, कमलेश भाई,नगरपालिका उप प्रमुख, ब्र.कु. अरुणा बहन,बारडोली, तरुण भाई,समाज सेवक, प्रतीक भाई,मामलतदार तथा नंदलाल भाई,पीआई।

फ्लोरिडा-यू.एस.ए.। कोरोना महामारी के कारण तीन वर्षों के लम्बे अंतराल के पश्चात् हॉलीवुड लाइब्रेरी में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा मेडिटेशन सेशन रखा गया जिसमें ब्र.कु. गंगा, ब्र.कु. मेरेडिथ, ब्र.कु. शीला, ब्र.कु. कैथरीन एवं ब्र.कु. एड्डा समेत 20 भाई-बहनें शामिल रहे।

मुम्बई-मालाड(जनकल्याण नगर)। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित 'द्वादश ज्योतिर्लिंग झाँकी' के उद्घाटन समारोह में अर्चना वाडे,समाजसेवी,बीजेपी, सीमा सक्सेना,को-फाउण्डर एंड डायरेक्टर,सप्तक म्युज़िक इंस्टीट्यूट, विवेक सक्सेना,कैप्टन,मर्चेंट नेवी, अनिल नौटियाल,मैनेजिंग पार्टनर,लकी रियल एस्टेट,मालाड वेस्ट, शिवानी नौटियाल,मैनेजिंग पार्टनर,लकी रियल एस्टेट,मालाड वेस्ट, यजुवेन्द्र सिंह,टीवी एंड फिल्म एक्टर, ब्र.कु. कुन्ती दीदी,संचालिका मालाड, ब्र.कु. मीना बहन,मालाड जनकल्याण नगर संचालिका, ब्र.कु. स्वाति बहन, ब्र.कु. पुनीत तथा अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।

इंदौर-प्रिकांको कॉलोनी(म.प्र.)। साईं मंदिर सेवा समिति की ओर से समाज के लिए उत्कृष्ट कार्य करने हेतु ब्र.कु. शैल दीदी को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया।

बिलासपुर-राज किशोर नगर(छ.ग.)। ब्रह्माकुमारीज़ के शिव अनुराग भवन सेवाकेन्द्र में महाशिवरात्रि पर्व पर आयोजित कार्यक्रम में आलोक कुमार जैन,महाप्रबंधक,द.पू.म.रेलवे, उनकी धर्मपत्नी मनिता जैन, एड प्रयास के ओनर विनोद पाण्डेय, समाजसेवी ममता पाण्डेय, नगर विधायक शैलेष पाण्डेय, क्रेडाई के अध्यक्ष अजय श्रीवास्तव, ब्र.कु. मंजू दीदी सहित अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

जबलपुर-नेपियर टाउन(म.प्र.)। महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर विशाल शिव संदेश शांति यात्रा का आयोजन किया गया जिसका विभिन्न स्थानों पर स्वागत किया गया। इस यात्रा में बड़ी संख्या में भाई-बहनें शामिल हुए।

गाडरवारा-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ के प्रभु उपहार भवन द्वारा 87वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती के पावन पर्व पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए विशाल सिंह ठाकुर,उत्तम विश्वकर्मा, रफीक भाई जान, संस्थान की नरसिंहपुर जिला संचालिका ब्र.कु. कुसुम दीदी, करेली सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु.सरोज दीदी, डोभी सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. जानकी दीदी तथा अन्य।

हर्बल टी को भी करें अपनी डाइट में शामिल

भारत में चाय एक पॉपुलर ड्रिंक है और बहुत से लोगों का दिन तो चाय के बिना शुरु ही नहीं होता। हर शाम गार्डन में बैठकर चाय की चुस्कियां लेना या फिर किताब पढ़ते हुए चाय पीने का भी अलग ही मज़ा है। आप अपनी इस आदत से ढ़ेरों फायदे भी पा सकते हैं और इसके लिए आपको ज़्यादा मेहनत नहीं करनी है। बस अपनी रेगुलर चाय को हर्बल टी से रिप्लेस कर दें।

हर्बल टी को आजकल बहुत कवरेज मिल रही है और इसके पीछे बहुत से कारण भी हैं। हर्बल टी आपके स्वास्थ्य के लिए कई मायनों में फायदेमंद है फिर चाहे बात कैमोमाइल टी की हो, टर्मरिक टी की हो या फिर पिपरमेंट टी की। हर्बल टी में एंटी-ऑक्सीडेंट्स होते हैं, साथ ही इनमें एंटी इंफ्लेमेटरी और एंटी वायरल गुण भी होते हैं। अगर आप हर्बल टी को अपनी डाइट में नियमित रूप से शामिल करती हैं तो आपको क्या-क्या फायदे मिलते हैं, आइए जानते हैं...

हर्बल टी के फायदे

एंग्ज़ायटी होती कम

सामान्य चाय में कैफीन होती है, जिसका अधिक सेवन आपके स्वास्थ्य को हानि पहुंचा सकता है। कैफीन शरीर को डिहाइड्रेट कर देती है। इसलिए आपको सामान्य चाय की जगह हर्बल टी का सेवन करना चाहिए। हर्बल टी में कैफीन नहीं होती है। कैफीन का सेवन कम करने से स्ट्रेस और एंग्ज़ाइटी कम करने में मदद मिलती है। रिसर्च बताती है कि रोज़ टी का सेवन करने और रोज़ वॉटर इन्हेल करने से एंग्ज़ाइटी के मरीजों को आराम मिलता है।

डाइजेशन होता अच्छा

डाइजेस्टिव और गैस्ट्रोइंटेस्टिनल प्रॉब्लम के लिए भी हर्बल टी बहुत लाभकारी हैं। आप इनका सेवन दिन में दो बार करेंगे तो आपका पाचन दुरुस्त होगा। विशेष तौर पर कैमोमाइल टी डाइजेस्टिव सिस्टम के फंक्शन में सुधार करती है। इसमें फ्लैवोनोइड्स और टरपेनोइड्स होते हैं। यह बुखार, इंफ्लेमेशन, मसल्स क्रैंप और इंसोम्निया जैसी समस्याओं को ठीक करने में मदद करती है।

एंटी-एजिंग गुण

हर्बल टी हर्ब्स से बनती हैं और हर्ब्स में एंटी ऑक्सीडेंट्स जैसे पॉलीफैनल, फ्लेवोनोइड और कैटेचिन्स आदि मौजूद होते हैं। एंटी ऑक्सीडेंट्स त्वचा को यूवी किरणों से प्रोटेक्ट करते हैं, साथ ही एंटी ऑक्सीडेंट्स ऑक्सीडेशन प्रोसेस को कम करते हैं जिससे शरीर में फ्री रेडिकल्स का प्रभाव कम होता है। फ्री रेडिकल्स एजिंग साइन्स के लिए ज़िम्मेदार होते हैं। इसलिए हर्बल टी का सेवन करने से एंटी-एजिंग इफेक्ट मिलते हैं और झुर्रियां/फाइन लाइन्स कम होती हैं।

बोन हेल्थ होती बेहतर

महिलाओं को अक्सर उम्र बढ़ने के साथ-साथ हड्डियों के जोड़ों में दर्द की शिकायत होने लगती है। घुटनों में दर्द बहुत ही आम समस्या हो गई है। ऐसे में हर्बल टी का सेवन आपके लिए लाभकारी होगा। हर्बल टी जैसे रूइबोस टी में आयरन, कैल्शियम, पोटेशियम, कॉपर, मैंगनीज, ज़िंक और मैग्नीशियम जैसे मिनरल्स होते हैं जो बोन डेंसिटी बढ़ाते हैं और हड्डियों का स्वास्थ्य बेहतर करने में मदद करते हैं।

इम्यूनिटी बढ़ती

हर्बल टी में पॉलीफेनॉल होते हैं, जोकि फाइटोकेमिकल होने की वजह से आपके इम्यून फंक्शन्स को बेहतर करता है और शरीर को कई बीमारियों से बचाता है। इम्यूनिटी अच्छी होने से आपका शरीर इंफेक्शन के खिलाफ लड़ सकता है साथ ही कई बीमारियों से खुद को बचा सकता है।

शरीर के दर्द में आराम

टर्मरिक टी या हल्दी की चाय उन लोगों के लिए लाभकारी है तो अर्थराइटिस या गाउट जैसी समस्याओं से जूझ रहे हैं। हल्दी में एंटी-इंफ्लेमेटरी प्रॉपर्टीज़ होती हैं जो जोड़ों से सूजन को कम करती है और अर्थराइटिस के लक्षणों को कम करती है।

राजगढ़-म.प्र.। हाई स्कूल सरेड़ी में राष्ट्रीय बालिका दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ की जिला संचालिका ब्र.कु. मधु बहन, प्रिंसिपल मिश्रीलाल दांगी, शिक्षिका रानू वर्मा, शिक्षिका कांता दांगी एवं स्कूल की बालिकाएं।

इंदौर-इंद्रपुरी(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर झांकी व भव्य शोभायात्रा का आयोजन हुआ जिसमें मधु वर्मा,पूर्व विकास प्राधिकरण, पार्षद सुनीता हार्डिया, मिसेज सिद्धू मैडके, एन.डी.पी.एस.,डॉ. सतीश पाठक, ब्र.कु.पूर्णिमा बहन तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

अम्बिकापुर-चोपड़ा पारा(छ.ग.)। 87वीं शिव जयंती पर शिव ध्वजारोहण करने के पश्चात् प्रतिज्ञा करते हुए संत महेश मुनी जी,दुर्गा मंदिर के व्यवस्थापक, स्वामी तन्मयानन्द जी,विवेकानन्द स्कूल के डायरेक्टर, हरिहर सिंह,सर्वेश्वरी समूह के व्यवस्थापक, हुकुम सिंह,अध्यक्ष संत केवल आश्रम, देवेन्द्र सिंह,मुख्य ग्रंथी गुरूसिंह सभा गुरूद्वारा, अजय तिवारी,आर्ट ऑफ लिविंग के संस्थापक, मंगल पाण्डे,सामाजिक कार्यकर्ता, सरगुजा संभाग की सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विद्या दीदी, ब्र.कु. प्रतिमा बहन तथा अन्य भाई-बहनें।

पेठ वडगांव-कोल्हापुर(महा.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर 8फीट ऊँचाई के फूलों के आकर्षक शिवलिंग के विधिपूर्वक उद्घाटन एवं पूजन के पश्चात् समूह चित्र में हैं जिला परिषद शिक्षण सभापति पविण यादव, वडगांव हाई स्कूल के मुख्य अध्यापक डी.के.पाटील, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु.योगिनी बहन, ब्र.कु.कीर्ति बहन तथा अन्य भाई-बहनें।

जबलपुर-अधारताल(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के उपसेवाकेन्द्र द्वारा त्रिमूर्ति शिव जयंती के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में महापौर जगत बहादुर सिंह(अन्नू), पूर्व विधायक लखन घनघोरिया, जबलपुर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. भावना बहन, यूरो किड्स की डायरेक्टर पूजा जैसवानी, आकर्षण कला केंद्र की संचालिका मंजूषा श्रीवास्तव, महाकौशल नगर की पार्षद अंजना मनीष अग्रहरि, डॉ. एस.के. पांडे, कैंसर रोग विशेषज्ञ डॉ. श्याम रावत, वरिष्ठ पत्रकार पवन पाण्डे, महेंद्र सिंह, ब्र.कु. रानू बहन, ब्र.कु. साधना बहन आदि उपस्थित रहे।

समय की मांग... निर्भरता को कम करते चलें

ब्र.कु. शिवानी बहन, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

हमें क्या लगता है, हम किन-किन चीज़ों के गुलाम हैं? कभी-कभी हम अपने आप को सिचुएशन पर डिपेंड पाते हैं, कभी लोगों के बिहेवियर पर, कभी-कभी तो टेक्नोलॉजी गैज़ेट, जो चीज़ें हम सारा दिन यूज़ करते हैं, उनके लिए भी हम कहते हैं कि इसके बिना मेरा नहीं चलता, इसके बिना तो मेरा काम ही नहीं हो सकता। कभी-कभी जब वह चीज़ ठीक नहीं चलती, एक चीज़ नहीं मिलती तो हम परेशान, हताश हो जाते हैं, तो उन साधनों के भी हम गुलाम बन जाते हैं। कभी-कभी हम खाने-पीने की चीज़ों के गुलाम बन जाते हैं। पता है कि ये नहीं खाना चाहिए, फिर भी कहते हैं क्या करें, इसके बिना मेरा नहीं चलता। यह ना हो तो मन परेशान हो जाता है, इनके बिना मेरा नहीं चलता, यह शब्द, यह बिलीफ सिस्टम हमारी इस गुलामी को, इस इमोशनल डिपेंडेंसी को, इस इमोशनल बॉन्डेज को बार-बार और पक्का करता जाता है, पक्का करता जाता है और जितना हम इसको पक्का करते जाते हैं हमारी गुलामी और बढ़ती जाती है। छोटी-छोटी बातों पर हम रिएक्ट कर देते हैं, कोई हमारी तरफ एक नज़र ठीक से ना देखे तो हम रूठ जाते हैं अर्थात् डिपेंडेंसी और बढ़ती जा रही है। आज हमें इन डिपेंडेंसीज़ को खत्म करना है।

हम सबको फ्रीडम अच्छी लगती है ना! लोगों को तो हम कह देते हैं मुझे फ्रीडम चाहिए, आप मुझे मत बोलो क्या करना है क्या नहीं करना है। आज हमें अपने मन को कहना है कि मुझे फ्रीडम चाहिए कि यह मेरा निजी संस्कार है, यह मेरा स्वभाव है, आई विल चूज़, आई विल चूज़। आज दिन तक हम चूज़ तो करते हैं जीवन के बड़े-बड़े डिसिज़न्स, कौन से कॉलेज में जाना है, कौन-सा कोर्स करना है, कौन हमारे फ्रेंड्स हैं, कहाँ काम करना है। यह हमारे जीवन के बड़े-बड़े डिसीज़न्स होते हैं और यह हमें चूज़ करने अच्छे लगते हैं। लेकिन कुछ डिसीज़न होते हैं जो सारा दिन हो रहे हैं। छोटे-छोटे डिसीज़न। कौन से डिसीज़न? कोई बात आई, सामने से कोई सिचुएशन आई, किसी व्यक्ति ने कुछ कहा, किसी तरह काम किया, ये सामने से आती हुई सारे दिन के अंदर छोटी-छोटी सिचुएशन्स हैं। लेकिन हर सिचुएशन में हम रिस्पॉन्ड करते हैं।

कोई भी बात आती है, हमारी एक थॉट चलती है। फिर कई सिचुएशन में हमारे बोल निकलते हैं, कुछ सिचुएशन्स में हमें बिहेव भी करना है। तो तीन एनर्जी है थॉट्स, वर्ड्स एंड बिहेवियर। ये हमारा रिस्पॉन्स है जो एवरी सिचुएशन है। लेकिन यह रिस्पॉन्स क्या हम चूज़ कर रहे हैं! क्या हम डिसाइड कर रहे हैं या हम सिर्फ जैसी सिचुएशन जैसा व्यक्ति वैसा हम रिएक्ट कर देते हैं और फिर कहते भी हैं कि मेरी गलती नहीं थी, बात ही ऐसी थी, उन्होंने बात ही ऐसी की। इसका मतलब हम अपने निर्णय की ज़िम्मेदारी भी नहीं लेते हैं,

लोगों को तो हम कह देते हैं मुझे फ्रीडम चाहिए, आप मुझे मत बोलो क्या करना है क्या नहीं करना है। आज हमें अपने मन को कहना है कि मुझे फ्रीडम चाहिए कि यह मेरा निजी संस्कार है, यह मेरा स्वभाव है, आई विल चूज़, आई विल चूज़।

क्योंकि हमें लगता ही नहीं कि यह मैंने डिसाइड किया था, हमें लगता ही नहीं कि यह मैंने चूज़ किया था। हमें लगता है कि यह अपने आप हो जाता है। इसका मतलब हम कौन-सी स्टेज पर आकर पहुंचे कि हमें यह अवेयरनेस ही नहीं है कि यह एक डिपेंडेंसी है, हमें अवेयरनेस ही नहीं है कि हम किसी के बिहेवियर, किसी के एक शब्द के गुलाम बन चुके हैं। हमारा मन स्वतंत्र नहीं है कि इसको क्या सोचना है, मुझे क्या बोलना है। इतनी डिपेंडेंसी आ गई है कि हमें अवेयरनेस ही नहीं है कि हम डिपेंडेंट हैं।

तो इस डिपेंडेंसी को, इस गुलामी को आज खत्म करना है ताकि सारे दिन के छोटे-डिसीज़न कि हर सीन में कैसे रिसपॉन्ड करना है, हरेक के व्यवहार के सामने कैसे रिसपॉन्ड करना है, कोई काम ठीक करे ना करे, मुझे कैसे रिस्पॉन्ड करना है। मेरा रिस्पॉन्स, मेरी थॉट, मेरा वर्ड, मेरा बिहेवियर मेरे अनुसार होना चाहिए, सही होना चाहिए, एक्यूरेट होना चाहिए।

अम्बिकापुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा कलाकेंद्र मैदान में महाशिवरात्रि पर्व के उपलक्ष्य पर आयोजित 'शिव अवतरण आध्यात्मिक मेला' का उद्घाटन माननीय मंत्री अमरजीत भगत,खाद्य योजना,आर्थिक-सांख्यिकी,संस्कृति विभाग द्वारा रिबन काटकर किया गया। इस मौके पर डॉ. अजय कुमार तिर्की,महापौर, आलोक दुबे,नगर निगम पार्षद, प्रबोध मिंज,पूर्व महापौर एवं प्रतिपक्ष नेता, स्वामी तन्मयानन्द जी,विवेकानन्द स्कूल के डायरेक्टर, श्रीमति रीनू जैन, राहुल जैन,के.आर.टेक्निकल कॉलेज के डायरेक्टर, अजय तिवारी,आर्ट ऑफ लिविंग के संचालक, मंगल पाण्डे,सामाजिक कार्यकर्ता, अनिल मिश्रा,सामाजिक कार्यकर्ता, सरगुजा संभाग की सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु.विद्या दीदी, ब्र.कु. प्रतिमा बहन तथा अन्य भाई-बहनें मौजूद रहे।

इंदौर-गंगोत्री(म.प्र.)। महाशिवरात्रि पर्व के अवसर पर केक कटिंग करते हुए मुकेश खटवा, मुकेश शर्मा, दिनेश गर्ग, संतोष बंसल,उद्योगपति, ओम अग्रवाल, नरेन्द्र वर्मा, ज्योति तोमर, ब्र.कु. सीमा बहन, ब्र.कु. ललिता बहन तथा अन्य भाई-बहनें।

नवी मुम्बई-सानपाड़ा। महाशिवरात्रि महोत्सव कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए डॉ. अंजली पाटील,मनोचिकित्सक, कॉर्पोरेटर सोमनाथ वासकर, अनिल शेठ,बिज़नेसमैन, संजय माळी,डायरेक्टर,किशन कंस्ट्रक्शन, हरीश इंगावले,युवा नेता, ब्र.कु. शीला दीदी, ब्र.कु. शुभांगी दीदी तथा अन्य।

नवापारा-राजिम(छ.ग.)। 87वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती के अवसर पर शिव ध्वजारोहण करते हुए डॉ.राजेंद्र गदिया, ब्र.कु.पुष्पा बहन, ब्र.कु. प्रिया बहन, ब्र.कु.पूजा बहन, ब्र.कु.नारायण भाई तथा अन्य।

मरोली-नवसारी(गुज.)। महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए सुरेंद्र सिंह,सीआईएसएफ पीआई, योगिना पटेल,ग्राम सरपंच, दिलीप रायका,सहकारी मंडली प्रमुख, राहुल पटेल,पूर्व तालुका पंचायत अध्यक्ष, ब्र.कु. मुकेश बहन, ब्र.कु.गीता बहन तथा अन्य।

सारंगपुर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सीनियर छात्रावास में राष्ट्रीय बालिका दिवस के अवसर पर कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. भाग्यलक्ष्मी बहन, छात्रावास की अध्यक्षा शशि वर्मा, द्रौपदी वर्मा, राज्य कर्मचारी संघ के जिला अध्यक्ष धर्मेंद्र वर्मा, ब्र.कु. प्रीति बहन, छात्रावास की कन्याएं तथा अन्य।

रतलाम-राजीव गांधी सिविक सेंटर(म.प्र.)। नगर निगम महापौर प्रहलाद पटेल से मुलाकात कर आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् उन्हें ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. मनोरमा बहन, ब्र.कु. आरती बहन, राजेश मोडिया तथा संजय पालीवाल।

खजुराहो-म.प्र.। सांसद बी.डी. शर्मा एवं कलेक्टर संदीप जी आर के आवाहन पर 40 दिनों से खजुराहो में चल रहे स्वच्छता अभियान के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा प्रेम सागर तालाब की सफाई एवं वृक्षारोपण किया गया। इस दौरान ब्र.कु. नीरजा बहन, मंगेश्वर सेवा समिति के पंडित सुधीर शर्मा, होटल एसोसिएशन के संरक्षक अविनाश तिवारी, खजुराहो क्लीन एंड ग्रीन आर्मी संयोजक पत्रकार देवेंद्र चतुर्वेदी, विश्व हिंदू परिषद के विभाग मंत्री अनुपम गुप्ता, क्लीन एंड ग्रीन आर्मी के परशुराम तिवारी, जुगल रिछारिया, राम कुमार चौबे, पत्रकार विनोद भारती, पत्रकार अरबाज़ खान आदि मौजूद रहे।

आमगांव बड़ा-नरसिंहपुर(म.प्र.)। महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में नगर के सभी मंदिरों के पुजारी और ट्रस्टियों के सम्मान में आयोजित समारोह में मोहन सकवार,सरपंच, सुरजीत सिसोदिया,जनपद सदस्य, प्रभात सिसोदिया,पत्रकार,पूर्व सरपंच, संजय कुमार गुप्ता,उपसरपंच, आशीष पसारी,पत्रकार, अंकुर महाजन,पत्रकार सहित मंदिरों के पुजारी रानुज ज्योतिषी, महेंद्र ज्योतिषी, संजय पुरोहित, अभिषेक तिवारी, राम सजीवन पुरोहित, गुलाब बाई शुक्ला, ब्र.कु. प्रीति बहन, ब्र.कु.वर्षा बहन, ब्र.कु. रजनीश भाई, ब्र.कु.जगदीश भाई, ब्र.कु. श्रीकांत भाई तथा अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।

परमात्म ऊर्जा

बातें सभी स्पष्ट देनी हैं लेकिन स्नेह के साथ। स्नेहमूर्त होने से उन्हों को जगत् माता के रूप का अनुभव होगा। जैसे माँ बच्चे को भले कैसे भी शब्दों में शिक्षा देती है, तो माँ के स्नेह कारण वह शब्द तेज़ व कडुवे महसूस नहीं होते। समझते हैं- माँ हमारी स्नेही है, कल्याणकारी है। वैसे ही आप भले कितना भी स्पष्ट शब्दों में बोलेंगे लेकिन वह महसूस नहीं करेंगे। तो ऐसे दोनों स्वरूप की समानता की सर्विस करनी है, तब ही सर्विस की सफलता समीप देखेंगे। कहाँ भी जाओ तो निर्भय होकर, सत्यता की शक्ति स्वरूप होकर, ऑलमाइटी गर्वनमेंट के सी.आई.डी ऑफिसर होकर उसी नशे से जाओ। इस नशे से बोलो, नशे से देखो। हम अनुचर हैं- इसी स्मृति से अयथार्थ को यथार्थ में लाना है। सत्य को प्रसिद्ध करना है, न कि छिपाना है। लेकिन दोनों रूपों की समानता चाहिए। किसको देखते हो वा कुछ सुनते हो तो तरस की भावना से देखते-सुनते हो या सीखने और कॉपी करने के लक्ष्य से सुनते-देखते हो? आजकल की जो भी अल्प सुख भोगने वाली आत्मायें प्रकृति दासी के शो में दिखाई देती हैं, उन्हों के शो को देखकर स्थिति क्या रहती है? यह आत्मायें इस तरीके व इस रीति-रस्म में, प्रकृति की दासी के रूप में स्टेज पर प्रख्यात हुई हैं, इसलिए हमें भी ऐसा करना चाहिए व हमें भी इन्हों के प्रमाण अपने में परिवर्तन करना चाहिए। यह संकल्प भी अगर आया तो उनको क्या कहेंगे? क्या दाता के बच्चे भिखारियों की कॉपी करते हैं? आपके आगे कितने भी पाम्प शो में आने वाली आत्माएं हों लेकिन होवनहार प्रत्यक्ष रूप के भिखारी हैं। इन सभी आत्माओं ने बापदादा के बच्चों से थोड़ी बहुत शक्ति की बूंदों को धारण किया है। आप लोगों के शक्ति की अंचली लेने से, आजकल इस अंचली के फल, प्रकृति दासी के फल रूप में देख रहे हैं। लेकिन अंचली लेने वाले को देख सागर के बच्चे क्या हो जाते हैं? प्रभावित। यह सभी थोड़े समय में ही आप लोगों के चरणों में झुकने के लिए तड़पेंगे। इसलिए स्नेह के साथ सर्विस का जोश भी होना चाहिए। जैसे शुरू में स्नेह भी था और जोश भी था। निर्भय थे, वातावरण व वायुमण्डल के आधार से परे। इसलिए एकरस सर्विस का उमंग और जोश था।

भंडारा-महा.। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित शिव संदेश शोभा यात्रा में ब्र.कु. शालू बहन, ब्र.कु. टिनेश्वरी बहन, ब्र.कु. पायल बहन, ब्र.कु. सोनाली बहन, ब्र.कु. हेमा बहन, ब्र.कु. गौरीशंकर भाई, ब्र.कु. शालिग्राम भाई सहित अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें शामिल रहे।

कथा सरिता

एकाग्रता का महत्त्व

एक महिला हर रोज़ पूजा करने के लिए मंदिर में जाती थी। लेकिन वो अपनी पूजा सही से नहीं कर पाती थी। वो महिला एक दिन परेशान होकर मंदिर के पुजारी के पास जाती है और उनसे कहती है कि कल से मैं पूजा करने के लिए मंदिर में नहीं आऊंगी।

पुजारी ने उस महिला से पूछा कि क्यों? महिला ने उस पुजारी को कहा कि मैं हर रोज़ मंदिर में आती हूँ और देखती हूँ कि यहाँ लोग आते हैं और फोन से अपने व्यापार की बात करते हैं। कुछ लोग ने तो मंदिर को ही गपशप करने का स्थान बना दिया है और कुछ लोग तो भगवान की पूजा कम और पाखंड ज़्यादा करते हैं।

इन सब लोगों से डिस्ट्रैक्ट होकर मैं अपना मन पूजा में नहीं लगा सकती हूँ और इसलिए मैंने ये तय किया है कि मैं कल से मंदिर में नहीं आऊंगी। पुजारी ने उस महिला से पूछा कि आप अपना अंतिम निर्णय लेने से पहले क्या मेरे कहने पर एक काम कर सकती हो? महिला ने कहा कि जी ज़रूर आप बताइये मुझे क्या करना है।

पुजारी ने महिला से कहा कि आप एक गिलास में पानी भर लीजिए और 2 बार मंदिर परिसर के अंदर परिक्रमा लगाइये लेकिन शर्त यह है कि गिलास का पानी गिरना नहीं चाहिए। महिला ने कहा अच्छा ठीक है मैं वैसा करती हूँ। थोड़ी ही देर में महिला ने एक गिलास में पानी लेकर वैसा ही कर दिखाया। उसके बाद पुजारी ने महिला से पूछा कि क्या आपने मंदिर में किसी को फोन पर बात करते हुए देखा, किसी

को पाखंड करते हुए देखा या फिर किसी को मंदिर में गपशप करते हुए देखा?

महिला ने पुजारी से कहा कि जी नहीं मैंने कुछ भी नहीं देखा। फिर पुजारी ने कहा कि जब आप परिक्रमा लगा रही थी तब आपका पूरा ध्यान गिलास पर ही था कि इसमें से पानी ना गिर जाये। इसलिए आपको कुछ भी नहीं दिखाई दिया। इस गिलास की तरह ही आप अब से जब भी मंदिर में आयें तो अपना ध्यान सिर्फ भगवान में ही लगाना फिर आपको कुछ नहीं दिखाई देगा। आपको दूसरी चीज़ें तभी दिखाई देती हैं जब आप उन पर ध्यान देते हैं और अपने काम में एकाग्रता नहीं रखते हैं।

ज़िंदगी का नज़रिया

एक बार चार दोस्त अपने कॉलेज के प्रोफेसर से मिलने के लिए उनके घर पर जाते हैं। वो प्रोफेसर अब बूढ़े हो चुके थे। वो इन चारों दोस्त को एक साथ देखकर बहुत खुश हो जाते हैं। वो लोग कुछ देर बातें करते हैं। बातें करने के बाद प्रोफेसर उनके लिए चाय बनाने के लिए अंदर जाते हैं।

ये चारों दोस्त अपनी-अपनी परेशानियां एक-दूसरे को बताने लगते हैं। कोई बोल रहा है कि मेरी सेलरी बहुत कम है, तो फिर कोई ये बता रहा था कि मेरे पास कार नहीं है और एक दोस्त बता रहा था कि मुझ पर अब कर्जा बहुत बढ़ गया है।

वे सब अपनी लाइफ से खुश नहीं थे। प्रोफेसर अंदर से इन सबकी बातें बहुत ही ध्यान से सुन रहे थे। प्रोफेसर ने बाहर आकर 4 कप उन चार दोस्तों के सामने रखे।

उस चार कप में से एक कप सोने का था, दूसरा कप चांदी का था, तीसरा कप कांच का था और चौथा कप साधारण था। प्रोफेसर ने उन चारों दोस्तों को चाय लेने को कहा। तभी प्रोफेसर ने देखा कि सबसे पहले सोने का कप था वो एक दोस्त ने उठा लिया, उसके बाद दूसरे ने चांदी का कप लिया और तीसरे ने कांच का कप उठाया। जब आखिर में कोई च्वाइस ही नहीं बची थी तो वो चौथे दोस्त ने आखिरी कप ले लिया।

ये देखते हुए प्रोफेसर बहुत मुस्कुराने लगे तभी उन चारों ने प्रोफेसर से पूछा कि आप क्यों मुस्कुरा रहे हो? तभी प्रोफेसर ने बताया कि मैं जब चाय बना रहा था तभी आप लोगों की बातें सुन रहा था और मैंने इसलिए ही आपको चाय देने के लिए चार अलग-अलग कप रखे थे।

प्रोफेसर ने उनको समझाते हुए कहा कि ये चाय हमारे जीवन की तरह है और ये जो चाय के अलग-अलग कप हैं वो हमारे जीवन का केवल नज़रिया ही है। सबको पीना तो चाय ही है लेकिन किसी ने सोने का कप लिया तो किसी ने चांदी का।

हम ये चाय मिट्टी के कप में भी पी सकते हैं और यही चाय सोने के कप में भी पी सकते हैं। इस तरह जीवन भी एक चाय ही है जोकि सबका समान है। लोग सांसारिक चीज़ें जैसे कि अच्छी जॉब, अच्छी कार, बड़ा बंगला और आदि के पीछे भागते रहते हैं और अपना सारा जीवन दुःख में ही निकाल देते हैं। इन सबकी वजह से वो लोग अपनी जीवनरूपी चाय का आनंद ही नहीं उठा पाते हैं। क्या फर्क पड़ता है कि हम चाय मिट्टी के कप में पिएं या फिर सोने के कप में? आखिर हमें पीनी तो चाय ही है ना।

हमें अपना जीवन सांसारिक चीज़ों के मोह में बर्बाद नहीं करना चाहिए। ये बात सच है कि हमें अपना लक्ष्य पूरा करना चाहिए और उसमें अपना बेस्ट एफ्फर्ट देना चाहिए, पर ये बात भी सच है कि हमें अपने लक्ष्य को खुश रहकर ही पूरा करना चाहिए।

हमारी ज़िंदगी तभी अच्छी बन सकती है जब हम ज़िंदगी का नज़रिया अच्छा बना दें।

नवरात्रि में नया बनकर नये युग में प्रवेश करें...

भारत में परंपरागत तरीके से नवरात्रि मनायी जाती है। नवरात्रि का भावनात्मक अर्थ है दुर्गा के नौ रूपों की नौ दिनों तक पूजा-अर्चना और नवरात्रि का आध्यात्मिक अर्थ है नव या नए युग में प्रवेश करने से ठीक पहले की ऐसी घोर अंधियारी रात्रि, जिसमें 'शिव' अवतरित होकर मनुष्यात्माओं के पतित अवचेतन मन(कुसंस्कार) का ज्ञान अमृत द्वारा तरण(उद्धार) कर देते हैं। अवतरण अर्थात् अवचेतन मन का तरण। ऐसी तरित-आत्माएं फिर चैतन्य देवियों के रूप में प्रत्यक्ष होकर कलियुगी मनुष्यों का

उद्धार करती हैं। इस प्रकार पहले शिवरात्रि होती है, फिर नवरात्रि और फिर नवयुग आता है। महाविनाश से यह वसुन्धरा जलमग्न होकर कल्पांत में अद्भुत स्नान करती है, फिर स्वच्छ होकर नौ लाख देवी-देवताओं के रूप में नौलखा हार धारण करती है।

1. नवरात्रि का पहला दिन दुर्गा देवी के रूप में मनाया जाता है। वह 'शैलपुत्री' के नाम से पूजी जाती है। बताया जाता है कि वह पर्वतराज हिमालय की पुत्री थी। इसलिए पर्वत की पुत्री 'पार्वती या शैलपुत्री' के नाम से शंकर की पत्नी बनी। दुर्गा को शिव-शक्ति कहा जाता है। हाथ में माला भी दिखाते हैं। माला परमात्मा के याद का प्रतीक है। जब परमात्मा को याद करेंगे तो जीवन में सामना करने की शक्ति, निर्णय करने, सहन करने, सहयोग करने इत्यादि अष्ट शक्तियां प्राप्त होती हैं। इसलिए दुर्गा को अष्ट भुजा दिखाते हैं।

2. नवरात्रि का दूसरा दिन देवी 'ब्रह्मचारिणी' का है, जिसका अर्थ है- तप का आचरण करने वाली। तप का आधार पवित्रता होता है, जिसके लिए जीवन में ब्रह्मचर्य की धारणा करना आवश्यक है। इस देवी के दाहिने हाथ में जप करने की माला और बाएं हाथ में कमण्डल दिखाया जाता है।

3. नवरात्रि के तीसरे दिन देवी 'चंद्रघण्टा' की पूजा की जाती है। पुराणों की मान्यता है कि असुरों के प्रभाव से देवता काफी दीन-हीन तथा दुःखी हो गए, तब देवी की आराधना करने लगे। फलस्वरूप देवी 'चंद्रघण्टा' ने प्रकट होकर असुरों का संहार करके देवताओं को संकट से मुक्त किया।

> नवरात्रि का आध्यात्मिक अर्थ है नव या नए युग में प्रवेश करने से ठीक पहले की ऐसी घोर अंधियारी रात्रि, जिसमें 'शिव' अवतरित होकर मनुष्यात्माओं के पतित अवचेतन मन में कुसंस्कार को बदल ज्ञान अमृत द्वारा उद्धार करना। परमात्मा हमारी पुरानी स्मृतियों को परवर्तित कर नये युग की तैयारी करने के समय के रूप में मनायें।

इस देवी के मस्तक पर घण्टे के आकार का अर्द्धचंद्र, 10 हाथों में खड्ग, शस्त्र, बाण इत्यादि धारण किये दिखाये जाते हैं। चंद्रघण्टा देवी की सवारी शक्ति का प्रतीक सिंह है जिसका अर्थ है कि शक्तियां(देवियां) अष्ट शक्तियों के आधार से शासन करती हैं।

4. नवरात्रि के चौथे दिन देवी 'कुष्माण्डा' के रूप में पूजा की जाती है। बताया जाता है कि यह खून पीने वाली देवी है। कालिका पुराण में देवी की पूजा में पशु बलि का विधान है। इसी मान्यता के आधार पर देवियों के स्थान पर बलि-प्रथा आज भी प्रचलित है। वास्तव में, हमारे अंदर जो भी विकारी स्वभाव और संस्कार हैं उस पर विकराल रूप धारण करके अर्थात् दृढ़ प्रतिज्ञा करके मुक्ति पाना है।

5. नवरात्रि के पाँचवें दिन देवी 'स्कन्द माता' के रूप में पूजा की जाती है। कहते हैं कि यह ज्ञान देने वाली देवी है। इनकी पूजा करने से ही मनुष्य ज्ञानी बनता है। यह भी बताया गया है कि स्कन्द माता की पूजा ब्रह्मा, विष्णु, शंकर समेत यक्ष, किन्नरों और दैत्यों ने भी की है।

6. नवरात्रि के छठवें दिन देवी 'कात्यायनी' के रूप में पूजा की जाती है। 'कत' एक प्रसिद्ध महर्षि बताये जाते हैं जिनके पुत्र 'कात्य' ऋषि थे। इनके ही गोत्र से महर्षि 'कात्यायन' उत्पन्न हुआ। महिषासुर दानव का वध जिस देवी ने किया था, उस देवी का प्रथम पूजन महर्षि कात्यायन ने किया था और इस कारण ही वह देवी कात्यायनी कहलाई। इनका वाहन सिंह दिखाया जाता है।

7. नवरात्रि के सातवें दिन देवी 'कालरात्रि' के रूप में पूजा की जाती है। इनके शरीर का रंग काला और सिर के बाल रौद्र रूप में बिखरे हुए दिखाये जाते हैं। इनका वाहन गधे को दिखाया गया है जिसका अर्थ है कि कलियुग में एक सामान्य गृहस्थ की हालत प्रतिकूल परिस्थितियों से जूझते हुए गधे जैसी हो जाती है और जब वह गधा अपने मन-बुद्धि में कालरात्रि जैसी देवी को बिठा लेता है तो देवी उस गृहस्थ को परिस्थितियों से पार निकाल ले जाती है।

8. नवरात्रि के आठवें दिन देवी 'महागौरी' के रूप में पूजा की जाती है। कहते हैं कि कन्या रूप में यह बिल्कुल काली थी। शंकर से शादी करने हेतु अपने गौरवर्ण के लिए ब्रह्मा की पूजा की, तब ब्रह्मा ने प्रसन्न होकर उसे काली से गोरी बना दिया। इसका आध्यात्मिक रहस्य यही है कि एक आत्मा को परमात्मा से सम्बंध जोड़ने के लिए खुद के सभी कालेपन अर्थात् विकार और बुराइयों को समाप्त करना ही होता है। एक सच्चे और साफ मन को ही परमात्मा स्वीकार करते हैं अर्थात् उसे अपना बना लेते हैं। इस देवी का वाहन वृषभ बैल दिखाया जाता है जो कि धर्म का प्रतीक है।

9. नवरात्रि के नौवें दिन देवी 'सिद्धिदात्री' के रूप में पूजा की जाती है। कहा गया है कि यह सिद्धिदात्री वह शक्ति है जो विश्व का कल्याण करती है। जगत का कष्ट दूर कर अपने भक्तजनों को मोक्ष प्रदान करती है।

इस तरह नौ देवियों के आध्यात्मिक रहस्यों को धारण करना ही नवरात्रि पर्व मनाना है। वर्तमान समय स्वयं निराकार परमपिता परमात्मा इस कलियुग के घोर अंधकार में माताओं-कन्याओं द्वारा सभी को ज्ञान देकर फिर से स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं। परमात्मा द्वारा दिए गए इस ज्ञान को धारण कर अब हम ऐसी नवरात्रि मनायें कि जो अपने अंदर महिषासुर, शुंभ-निशुंभ और मधु-कैटभ जैसे विकार हैं, वह खत्म हो जायें, मर जायें। तो हे आत्माओं! अब जागो, केवल नवरात्रि का जागरण ही नहीं करो बल्कि इस अज्ञान नींद से भी जागो। यही सच्ची-सच्ची नवरात्रि मनाना और जागरण करना है। ऐसी नवरात्रि की आप सभी को बहुत-बहुत बधाई।

वडोदरा-अलकापुरी(गुज.)। 87वीं महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित संत सम्मेलन में संत रत्न श्री श्री 108 श्री ज्योतिश्वर जी महाराज, संत महेंद्र जी, संत रामकरण दास जी, ब्र.कु. डॉ. निरंजना दीदी, ब्र.कु. भाविन, ब्र.कु. नरेंद्र तथा अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।

छतरपुर-म.प्र.। महाशिवरात्रि महोत्सव के पावन पर्व पर शिव ध्वजारोहण करने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में इनकम टैक्स ऑफिसर इरफान खान, समाजसेवी सुरेश बाबू खरे, संगीता टिकरिया, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु.शैलजा दीदी तथा अन्य।

राजगढ़-ब्यावरा(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ एवं जेल प्रशासन के संयुक्त तत्वावधान में बंदियों के नैतिक उत्थान हेतु जिला जेल परिसर में सात दिवसीय 'गीता प्रवचन' का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए जेल अधीक्षक एन.एस. राणा, उप जेलर उज्जवला वागमारे, ब्रह्माकुमारीज़ की जिला संचालिका ब्र.कु. मधु बहन, ब्र.कु. सुरेखा बहन, समाजसेवी प्रताप सिंह सिसोदिया, भूमि विकास बैंक के रिटायर्ड मैनेजर अरविंद सक्सेना, रिटायर्ड बैंक मैनेजर शिव नामदेव तथा अन्य।

त्रासदी में तत्वों से पार ले जाता है योग

आज मानव मन की दशा किसी से छुपी हुई नहीं है। हर कोई आज पूरी तरह से त्रस्त(भयभीत) है, तनाव ग्रस्त है। अगर कोई कर्म कर रहा है तो उसमें कोई न कोई लोभ है, इच्छायें हैं, लालसा है, विलासा है जो हमारे पाप कर्मों के खाते को और बढ़ाता जा रहा है। पुण्य तो सोच ही नहीं सकता कि आज मानव पुण्य का काम कर रहे हैं। सो पुण्य क्या है? पुण्य सिर्फ ये है कि जितना ज़्यादा से ज़्यादा हम इन तत्वों के साथ रहते हुए, इन तत्वों के बीच में रहकर पूरे विश्व की आत्माओं को वो दें जो उनको इस समय ज़रूरत है, तो तत्व भी सतोप्रधान होंगे। तत्वों में बल आयेगा और हम इन तत्वों से कभी आहत नहीं होंगे। उदाहरण के लिए मैं आपको एक बात कहना चाहूँगा कि जैसे कहा जाता है कि अगर कोई भी बहुत करीबी आपका हो और कोई भी चीज़ आपको उसे देनी हो तो आप ज़्यादातर उसको वो चीज़ें देते हैं जो चीज़ें उसके लायक हैं, लेकिन वो व्यक्ति बार-बार आपको उस चीज़ को खराब करके दे तो एक समय ऐसा आयेगा कि आप चीज़ तो देंगे लेकिन वो देंगे जो पहले से खराब हुई पड़ी है, या दिखा देंगे। अच्छी चीज़ अपने लिए रखेंगे।

ऐसे ही प्रकृति है। पूरे दिन, पूरी रात जो हमारी सोच और संकल्प चलते हैं उसमें हमारी सोच और संकल्पों में सिर्फ और सिर्फ काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की बातें ही हैं, और कुछ भी नहीं हैं। यही पूरे विश्व में वायब्रेट हो रहा है। पूरे विश्व की आत्माओं को यही बातें जा रही हैं। और वही हमको रिवर्ट(लौटना) होकर मिल भी रही हैं। प्रकृति ने हमको ये एक बहुत सुन्दर शरीर दिया जब हमने बहुत अच्छा कर्म किया था। अब धीरे-धीरे हम प्रकृति के तत्वों को डैमेज कर-कर के वो शरीर लौटाते चले गये, तो आज हमको वैसा ही शरीर प्राप्त हो रहा है जो हमने प्रकृति को लौटाया है। इसलिए अगर प्रकृति को मुझे सच में अच्छा देना है तो सबसे पहले उन तत्वों को उन सभी को वो चीज़ें हमको प्रदान करनी पड़ेंगी जो उनके लिए सुखदाई हो। प्रकृति का हर तत्व हमको कितना सुख देता है बिना टैक्स लिए सुख देता है। हवा, पानी, अग्नि, धरती और आकाश। बिना शर्त, बिना कंडीशन हमको सुख देते हैं। इस दुनिया में बिना कंडीशन जो हमको सुख देता है, सेल्फलेस सर्विस करता है उसकी रक्षा हम करते हैं। ये सबसे अच्छा उदाहरण है हमारे जीवन के लिए कि देखो हम आपके बारे में कितना सोचते हैं। पानी के बारे में कितना सोचते हैं। जल को संरक्षण देने के बारे में सोचते हैं, हवा को शुद्ध करने के बारे में सोचते हैं। सोचते हैं ना! क्यों सोचते हैं, क्योंकि ये निःस्वार्थ भाव से हमारी सेवा करते हैं। लेकिन जैसे ही हम सभी स्वार्थी हुए तो और-और चीज़ों पर हमारा ध्यान चला गया प्रकृति को छोड़कर, लेकिन आपको पता हो कि बिना प्रकृति के तो हमारा शरीर नहीं रहेगा ना! इसलिए प्रकृति की तरफ से प्राकृतिक आपदायें हमको डिस्टर्ब कर रही हैं।

इसलिए जो योग ब्रह्माकुमारीज़ में सिखाया जाता है उसका सबसे बड़ा रोल यही है कि जब हम अच्छे सोच और संकल्प में जीवन जीना शुरु करते हैं तो ऑटोमेटिकली हमारे अन्दर से जो थॉट हमारे ब्रेन को जाते हैं, हमारे स्पाइन कॉर्ड को जाते हैं, हमारे पूरे बॉडी पार्टस को जो भी चीज़ें जाती हैं उससे वायब्रेट होकर चारों तरफ वही तरंगे वायब्रेट होकर फैल जाती हैं। और उससे सिर्फ वही चीज़ें चारों तरफ जाती हैं, जो लोग उससे मिलते हैं वो सारी चीज़ें उनको मिल भी जाती हैं। तो आप सोचो प्रकृति को हम नैचुरल बिना किसी एफर्ट(प्रयत्न) के एक छोटा-सा अभ्यास करके उसको बहुत कुछ प्रदान कर सकते हैं। तो क्यों न हम प्रकृति को इस तरह से सतोप्रधान बनायें। अच्छी सोच और अच्छे सकंल्पों के लिए एक बार परमात्मा से शक्ति लेकर जिस प्रकृति ने आपको इतना सुख दिया है, इतना अच्छा जीवन दिया है, इतने समय तक इतना सुन्दर वस्त्र दिया है वो आप कैसा लौटा रहे हैं। इसलिए आज शरीर अपंग पैदा हो रहे हैं क्योंकि हमने शरीर उसको ऐसा लौटाया है।

ब्र.कु. अनुज भाई,दिल्ली

अब समय आ गया है कि प्रकृति को सही चीज़ दें ताकि जब ज़रूरत पड़े या हमारा जीवन नया मिले तो हमको प्रकृति की तरफ से तोहफे के रूप में अच्छा शरीर मिले। वो शरीर जिस शरीर के अन्दर कोई रोग न हो, निरोगी काया हो।

तन इतना सुन्दर हो कि उसमें कोई रोग नहीं है तभी तो तन को आपको चलाने में आसानी होगी। इसका एक मात्र तरीका है प्रकृति को अच्छी बातें देना, अच्छे संकल्प देना, अपने शरीर की प्रकृति को बैलेन्स देना, इसको वो खिलाना जो सात्विकता हो, जो प्रकृति को पसंद है, ना कि मांसाहार, ऐसी चीज़ें जो शरीर को नुकसान पहुंचाती हैं। वो अगर हम देंगे तो त्रासदी हम देख रहे हैं। इसलिए इसका उदाहरण जो सामने दिख रहा है उससे अच्छा कुछ नहीं हो सकता। चलो हम जाग जाते हैं और अपने आपको ऐसे समय में, तत्वों से पार जाने के लिए परमात्मा के साथ जुड़कर इन तत्वों को सतोप्रधान बनाने की सेवा करते हैं और अच्छे शरीरों का निर्माण करते हैं।

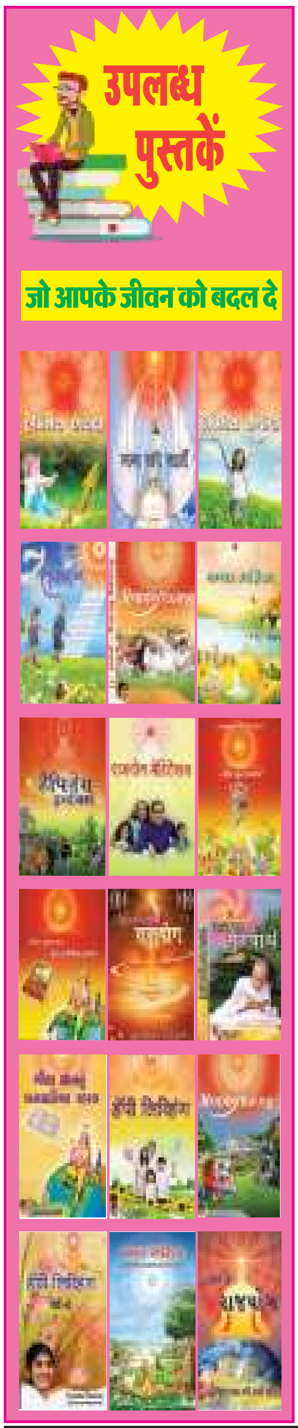

मन की बातें

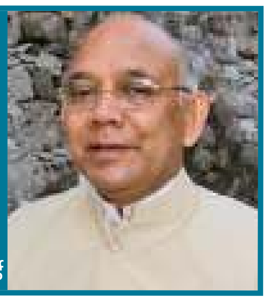
- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य भाई

प्रश्न- मेरा नाम लक्ष्मण चौहान है। कार्य करते हुए मेरा चित्त एकाग्र नहीं होता, एक कार्य हाथ में होता है, चिंता दूसरे की लगी रहती है। सफलता तो जीवन से जैसे गायब-सी ही हो गई है, ऐसे में मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर - एकाग्रता मनुष्य की दिनोंदिन नष्ट होती जा रही है और नष्ट होने के कारण उसकी मानसिक शक्तियों में ह्रास हो रहा है इसलिए सफलता उससे दूर चली जा रही है। यही कारण है कि मनुष्य को खुशी नहीं होती। अब जब सफलता ही नहीं होगी, जो कार्य करने मनुष्य गया वो निराश होकर लौटा है तो नींद पर भी उसका असर आयेगा, पारिवारिक जीवन पर उसका असर आयेगा। उसकी छाया उसके मानस पटल पर प्रैक्टिकल में दिखाई देती रहेगी। तो हमें इस चीज़ पर बहुत ध्यान देना है कि हमारी एकाग्रता भंग न हो, हालाँकि ये एक बहुत बड़ा सब्जेक्ट है और हम इस पर बार-बार चर्चा करते ही आते हैं लेकिन आज मैं इस पर इतना कहूँगा कि हर मनुष्य को सवेरे से ही यह चेक कर लेना चाहिए कि मेरा मन किस दिशा में ज़्यादा भटकता है और इस मन को भटकने से रोकने के लिए एक मोस्ट इम्पोंटेंट जो चीज़ है कि हम सवेरे अपने मन में सुंदर थॉट क्रियेट करें। ये बात सभी बहुत अच्छी तरह जान लें कि हमारे मन में बहुत बड़ी क्रिएटिव एनर्जी है। हम उसको यूज़ नहीं करते तो क्रिएटिव एनर्जी निगेटिव क्रियेट करने में यूज़ होने लगती है। हम अपनी क्रिएटिव एनर्जी को पहचानें और सुंदर संकल्प सवेरे से ही क्रियेट करना शुरू करें।

सुबह उठते ही बहुत अच्छे, वाह! मेरा जीवन कितना सुन्दर है, प्रकृति कितनी सुंदर है। हे प्रभु, तुमने कितना सुंदर संसार बनाया है वाह! हम तो धन्य हो गये, हमारा जीवन तो बहुत सुंदर हो गया। तुम हमें मिल गये हो वाह! मेरा भाग्य, मैं तो बहुत भाग्यवान आत्मा हूँ। आपने मुझे ब्लैसिंग दे दी। वरदान दे दिया है सफलता का, निर्विघ्न जीवन का, आज तो मैं सारा दिन निर्विघ्न रहूँगा। सफलता तो मेरे आगे-पीछे चलेगी। ऐसे संकल्प उठते ही कर देने चाहिए। इसलिए हमारे यहाँ रोज़ सवेरे ईश्वरीय महावाक्य सुनने का नियम है और जो लोग ईश्वरीय महावाक्य सुनते हैं उन्हें रोज़ अनुभव होता है कि उन्हें अच्छे थॉट मिल जाते हैं। तो इसमें ये जो थॉट हमें परेशान कर रहे थे उसने हमारे मन पर अपना अधिकार कर लिया था। अब हम इन नये थॉटस के द्वारा अपने मन पर पूर्ण अपना अधिकार करें तो इससे सारा दिन बहुत मदद मिलेगी और अगर कोई बहुत अच्छा पुरूषार्थ करना चाहता है तो सारे दिन में जो ईश्वरीय महावाक्य सुने हैं उनमें से कोई दो महावाक्य, दो-तीन बार अवश्य याद कर लेना चाहिए।

तो ये चेक करें कि मन किस दिशा में भटकता है और दूसरा सवेरे बहुत अच्छे थॉटस क्रियेट करें और तीसरी चीज़ जो आपको करनी होगी कि बीच-बीच में हर घंटे में एक बार कम से कम दस सेकण्ड ये अभ्यास ज़रूर करें कि मैं एक आत्मा हूँ, इस देह से अलग हूँ। मैं भगवान का बच्चा हूँ, महान आत्मा हूँ ऐसी फीलिंग देंगे तो संकल्प का प्रवाह ठीक होगा। मन एकाग्र होगा तो आपको सफलता अवश्य प्राप्त होगी।

प्रश्न- मेरा नाम प्रशांत है। मैं अभी यूएई में जॉब करता हूँ। मैं अहमदाबाद सिटी से बिलोंग करता हूँ। मेरी प्रॉब्लम ये है कि मेरे फादर हमेशा ही छोटी-छोटी बातों में गुस्सा करते हैं, बात-बात में मम्मी से लड़ते रहते हैं और हम दोनों को ही रिस्पेक्ट नहीं देते हैं। मैं चाहता हूँ कि मम्मी-पापा दोनों बहुत प्यार से रहें और रिस्पेक्ट भी दें, क्या इसके लिए कोई योग का अभ्यास हो सकता है?

उत्तर - हाँ, ये समस्या बहुतों की है। कई घरों में ऐसा है कि कहीं मम्मी में, कहीं पापा में क्रोध रहता है। बच्चे कहीं-न-कहीं सोचते तो हैं ना कि उनके घर में सम्पूर्ण सुख-शांति हो। तो मैं दोनों को कहूँगा कि जो समझदार हो उसे चुप रहना चाहिए, पहली चुपी करनी चाहिए मातृशक्ति को, क्योंकि मातायें अधिक सहनशील होती हैं। पुरूष में कहीं-न-कहीं ज़्यादा 'ईगो' रहता ही है, मेल 'ईगो' भी रहता है इसलिए आपकी माता जी के लिए कहूँगा कि मेरी ये रिक्वेस्ट है कि वो अपने घर में शांति स्थापित करने के लिए अपने पति को सम्मान दे और उनकी बात सुन लिया करें। ठीक है वो गलत बोलते होंगे, गलत शब्दों का भी प्रयोग करते होंगे जो मनुष्य की रिस्पेक्ट को ज़रा नीचा कर दे। और आपके पापा को भी मैं कहूँगा कि क्रोध अशांति पैदा करता है, क्रोध एक अग्नि है जिसमें मनुष्य की सुख-शांति, सम्पत्ति, उसका श्रेष्ठ भाग्य सब कुछ नष्ट हो जाता है। मनुष्य निगेटिव हो जाता है, क्रोध अनेक बीमारियों को भी जन्म देता है।

तो आपका कर्त्तव्य है कि जब तक आप अपने घर अहमदाबाद में हैं तब तक रोज़ आधा घंटा सवेरे, आधा घंटा शाम को अपने घर में शांति के वायब्रेशन फैलायें। मैं आत्मा पीसफुल हूँ, मास्टर ज्ञान सूर्य हूँ, केवल इतना ही और मुझ से शांति की किरणें फैल रही हैं। एक ये अभ्यास करेंगे और थोड़ा-सा सवेरे पाँच बजे जब आपके पाप सोये हों तो उन्हें आत्मिक दृष्टि से देखते हुए चार-पाँच मिनट अच्छे वायब्रेशन देंगे और उसका तरीका ये होगा कि शिवबाबा के वायब्रेशन मुझे आ रहे हैं और मुझ आत्मा से निकलकर उनकी आत्मा को जा रहे हैं,और फिर एक मिनट के लिए उन्हें संकल्प देंगे- तुम पीसफुल सोल हो। पापा तुम तो ग्रेट सोल हो, तुम बहुत बुद्धिमान हो, अभी तुम्हें अपनी शक्तियों को, मन की शक्तियों को क्रोध में नष्ट नहीं करना है। बी पीसफुल, बी पीसफुल। तो शांति के वायब्रेशन उनको जायेंगे और उनके विवेक की जागृति होगी। जब वो उठेंगे, दो-चार दिन लगेंगे इसमें, उन्हें ये फील होने लगेगा कि क्रोध तो बहुत बुरा है। दो दिन होंगे, चार दिन होंगे, फिर सात दिन में बहुत अच्छा रिज़ल्ट दिखाई देगा। और जब आप अपनी जॉब के लिए भी यूएई चले जायें तब भी आपको ये काम करते ही रहना चाहिए। तो 21 दिन में बहुत अच्छा हो जायेगा।

इसमें सबको यही सिद्धांत याद रखना चाहिए कि जब कोई व्यक्ति सोया है तो उसका सबकॉन्शियस माइंड जगा है। जो कुछ विचार हम इधर से देते हैं तो सबकॉन्शियस माइंड उसे आसानी से रिसीव कर लेता है।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल

लोभवश भटकते मन को रोकें...

वरिष्ठ
राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

संतुष्टता हमारे अनेक व्यर्थ संकल्पों को शांत कर देती है। एक योगयुक्त आत्मा का प्रमुख गुण है जो उसके जीवन से, व्यवहार से, चेहरे से, बोल-चाल से दिखायी देगा, संतुष्टता। योगी अगर संतुष्ट नहीं है तो उसका मन अवश्य भटकेगा। कई सन्यासियों की बातें भी हम सुना करते थे। बहुत पैसा भी लोग उन पर चढ़ाते थे, लेकिन वो झोपड़ी में ही रहे। पैसा जो भी आता था, भंडारा करा देते थे। उनको कुछ नहीं चाहिए। वही प्रसिद्ध हुए, वो ही दूसरों का कल्याण कर सके। जिसके मन में इच्छाओं का उबाल आता रहा है ये चाहिए, ये चाहिए...। जिसकी इच्छायें कभी शांत ही नहीं होती। कभी खान-पान की इच्छा, कभी पहनने की इच्छा, कभी इलेक्ट्रोनिक साधनों की इच्छा, सुंदर घर में रहने की इच्छा, प्लेन से यात्रा करने की इच्छा। इच्छाओं के तो सौ प्रकार हैं। इच्छाओं का फैलाव मन को कमज़ोर कर देता है। जो मनुष्य संतुष्ट नहीं है वो लोभी हो जाता है। कहावत आप ने सुनी होगी। "लोभी नर कंगाल है, दुःख पावत दुःख लेत"। दुःख देता भी है, दुःख लेता भी है और वो कंगाल ही है सचमुच। कईयों के पास बहुत पैसे हैं लेकिन रहते ऐसे जैसे कंगाल, पेंट भी फटी हुई पहनेंगे। वैसे आजकल तो फटी हुई पेंट पहनना फैशन हो गया है, लेकिन कई बड़े लोग भी जो समझदार हैं वो आधुनिकता के चक्रव्यूह में नहीं उलझते। कपड़े पुराने-सुराने पहने रहेंगे। घर में भी साफ-सफाई नहीं करने देंगे, नौकरानी नहीं रखने देंगे। लोभी रहते हैं, पैसा बचाओ, पैसा बचाओ। इससे कोई फायदा नहीं होता।

मनुष्य क्यों कमाता है? परिवार को, स्वयं को सुखी रखने के लिए, तो हमें लोभ के वश नहीं होना है। देखिये, एक है इच्छायें, दूसरी होती हैं आवश्यकतायें। आवश्यकतायें तो जो हैं वो हैं। अभी आपको कोई बीमारी हो गई तो आपको दवाई की आवश्यकता है। ठंडी बढ़ गई आपको गर्म कपड़ों की आवश्यकता है। बहुत गर्मी हो गई आपको पंखे की, ए.सी. की आवश्यकता है। वो तो आवश्यकतायें हैं, उनको तो पूर्ण करना ही होगा लेकिन कुछ मनुष्य कहीं भी तृप्त नहीं होते हैं। ये चीज़ मिल गई, दूसरे के पास देख लिया, उसके पास अच्छी है उससे अच्छी लूँगा, कपड़े अच्छे पहनने हैं, ज्वेलरी बहुत अच्छी है। दूसरों को वैसी पहने देख लिया तो सोचेंगे कि ये तो मजा नहीं आया, इससे अच्छी होनी चाहिए मेरे पास, मन भटकेगा। ऐसा न भी हो तो इक्ट्ठा करने का प्लान बनायेंगे। ऐसे लोग दूसरों को धोखा भी बहुत देते हैं। गलत तरीकों से धन कमाते रहते हैं, वो भी एक चोरी है। व्यर्थ संकल्पों का तूफान मन में रहता है। वो अपने मन को एकाग्र करना चाहें तो नहीं कर सकते हैं, अनेक विद्यार्थी हमने देखें हैं। भिन्न-भिन्न कारणों से उनके मन की गति बहुत तेज़ हो जाती है तो चित्त शांत नहीं होता। एकाग्रता नहीं होती है। पढ़ाई-लिखाई भारी लगती है। टेंशन पैदा करती है।

मुझे तो भगवान से ही सब कुछ लेना है। मुझे तो स्वर्ग की राजाई चाहिए, इससे कम कुछ नहीं चाहिए। मैं तो नर से श्री नारायण, नारी से श्री लक्ष्मी ही बनूँगी। चाहे मुझे कितनी भी तपस्या करनी पड़े। इस तरह के सुंदर विचार मन को नयी दिशा देंगे।

इसलिए आज सभी अपने मन में संकल्प करें कि जब हम भगवान के बच्चे बन गये, उससे हमें सब कुछ मिल रहा है तो क्यों न हम उससे सब कुछ लें? सांसारिक इच्छायें, ये संसार की छोटी-मोटी प्राप्तियाँ, ये कई युगों से हमारे साथ रही हैं। सतयुग में तो क्या-क्या होगा हमारे पास, इतना ज़्यादा होगा जो कोई इच्छायें ही नहीं होंगी। हम इतने सम्पन्न और भरपूर होंगे। तो क्यों न हम उस स्थिति की ओर चलें,लोभ पर ध्यान दें। ऐसा तो नहीं बहुत कुछ होते भी हमारा लोभ समाप्त नहीं होता है! आत्मा संतुष्ट हो ही नहीं रही है! संतुष्टता तो बहुत सुंदर चीज़ है भगवान के शब्दों में, संतुष्टता बहुत बड़ी प्रोपर्टी है और प्रसन्नता तुम्हारी पर्सनैलिटी है। जो व्यक्ति लोभी है वो तो चक्रव्यूह में घूमता ही रहता है।

केवल जो भगवान के बच्चे बन गये, जिन्होंने ईश्वरीय प्राप्तियों के बाद अपने चित्त को शांत और संतुष्ट कर लिया वे इस लोभ से मुक्त होकर अपने को शांत कर सकते हैं। तो चेक करेंगे भगवान को पाने के बाद भी हम इस संसार से और क्या पाना चाहते हैं। जबकि वो स्वर्ग की राजाई हमारे लिये लेकर आया है। जबकि वो हाईएस्ट स्टेटस देने आ गया है तो हम उसे छोड़कर किसके पीछे भाग रहे हैं? जो तृष्णायें हैं, जहाँ से आत्मा तृप्त होगी ही नहीं, जो व्यर्थ संकल्पों को जन्म दे रही हैं। अपने स्वमान को बढ़ायें- मैं भरपूर आत्मा हूँ, सम्पन्न हूँ। मैं तो दाता हूँ, देने वाली हूँ, इष्ट देव-देवी हूँ, मेरा दर्शन करके ही अनेकों की मनोकामनायें पूर्ण हो जाती हैं। मुझे माँगने का हाथ तो फैलाना ही नहीं है। मुझे अपने मन से इच्छाओं को कम करना है। एक लक्ष्य बना लें।

मुझे तो भगवान से ही सब कुछ लेना है। मुझे तो स्वर्ग की राजाई चाहिए, इससे कम कुछ नहीं चाहिए। मैं तो नर से श्री नारायण, नारी से श्री लक्ष्मी ही बनूँगी। चाहे मुझे कितनी भी तपस्या करनी पड़े। इस तरह के सुंदर विचार मन को नयी दिशा देंगे। उमंग-उत्साह देंगे, व्यर्थ से मुक्त रखेंगे। फिर धीरे-धीरे आप छह मास में अनेक इच्छाओं की गुलामी से मुक्त हो जायेंगे।

रायपुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा महाशिवरात्रि महोत्सव के अंतर्गत विधानसभा मार्ग स्थित शांति सरोवर परिसर में आयोजित आठ दिवसीय मेले का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए अपर कलेक्टर उज्जवल पोरवाल, संस्थान की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी तथा ब्र.कु. सविता दीदी। इस मेले का मुख्य आकर्षण तीन सौ फीट लम्बी गुफा के अंदर द्वादश ज्योतिर्लिंग दर्शन के साथ-साथ होलोग्राम शो रहा।

सुजानगढ़-राज.। 87वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती के उपलक्ष्य में 'एक शाम प्रभु के नाम' संगीत संध्या 'संगीत के द्वारा आध्यात्मिक क्रांति लाएगी विश्व शांति' कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें परमात्मा शिव का संदेश देने हेतु आयोजित कलश यात्रा को गोपालपुरा सरपंच सविता राठी ने हरी झंडी दिखाकर तिरुपति बालाजी मंदिर से रवाना किया। इस अवसर पर आयोजित संगीत संध्या में सभापति नीलोफर गौरी, सरपंच सविता राठी, बाबूलाल कुलदीप, ओमशान्ति मीडिया के संपादक ब्र.कु. गंगाधर भाई,मा.आबू, हास्य कलाकार मुरारी लाल पारीक, बॉलीवुड गायक सुखीराम मंडा, रुचि खंडेलवाल, लोडसर की शारदा प्रजापत व अन्य कलाकारों सहित ब्र.कु. विनती बहन, ब्र.कु. सुप्रभा बहन, ब्र.कु. ज्योति बहन, ब्र.कु. मिनति बहन व अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

ग्वालियर-माधौगंज(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के प्रभु उपहार भवन में 87वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए राजीव गुप्ता,मुख्य अभियंता,ग्वालियर संभाग,एम.पी.ई.बी, आशीष प्रताप सिंह,प्रदेश कार्य समिति सदस्य भा.ज.पा., विनीता गुप्ता,प्रिंसिपल शासकीय विद्यालय, लश्कर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु.आदर्श दीदी, ब्र.कु.ज्योति बहन, ब्र.कु.डॉ. गुरुचरण भाई तथा ब्र.कु. प्रहलाद भाई।

नवी मुम्बई-सीबीडी बेलापुर। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए डॉ. गणेश धूमाळ,मेडिकल ऑफिसर कोकन भवन, दीवानजी पवार,समाजसेवक,सिटी एंड इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन, एडवोकेट गणेश अखाडे, ब्र.कु. शीला दीदी, ब्र.कु. मीरा दीदी तथा अन्य।

मालीया हाटीना-गुज.। महाशिवरात्रि महोत्सव के अंतर्गत 'शिव अवतरण से स्वर्णिम भारत की ओर' कार्यक्रम में शिव ध्वजारोहण करते हुए भगवान करगठिया,एमएलए, दिलीप सिसोदिया,तालुका पंचायत प्रमुख, राजेश भालोडिया, तालुका भाजपा प्रमुख, जितु सिसोदिया,सरपंच, आभा मल्होत्रा,मेडिकल ऑफिसर, ब्र.कु. मीता बहन,स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका, ब्र.कु. रूपा बहन,केशोद सेवाकेन्द्र संचालिका तथा अन्य।

इंदौर-प्रेम नगर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के अनुभूति भवन में 87वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव पर 'विश्व सद्भावना का पर्व महाशिवरात्रि' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए सुरजीत सिंह टुटेजा,मोटिवेशनल स्पीकर,प्रतिनिधि प्रताप नगर गुरूद्वारा, डॉ.अनिल शिवानी,एग्ज़ामिनेशन कंट्रोलर,देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर, पियस लाकरा,फादर,डायरेक्टर,सेंटर फॉर इंटर रिलीजियस हारमनी, ब्र.कु. शशि दीदी,संचालिका,प्रेमनगर इंदौर पश्चिम क्षेत्र, ब्र.कु.यशवनी दीदी, संचालिका,बिजलपुर सेवाकेन्द्र, ब्र.कु.शारदा दीदी,सेवाकेन्द्र संचालिका,बैराठी कॉलोनी तथा अन्य।

खरगोन-म.प्र.। महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर शिव ध्वजारोहण करने के पश्चात् प्रतिज्ञा कराते हुए राजयोगिनी ब्र.कु.किरण दीदी, पूर्व विधायक बाबूलाल महाजन, उद्योगपति नरेन्द्र गांधी, वार्ड पार्षद श्वेता महाजन, दंत चिकित्सक डॉ.पालीवाल, ब्र.कु. प्रभाकर तथा अन्य।

बसना-छ.ग.। 87वीं शिव जयंती के पावन पर्व पर शिव ध्वजारोहण कर प्रतिज्ञा ली गई। साथ ही शिव मंदिर के समक्ष आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें ब्र.कु.भुवनेश्वरी बहन, ब्र.कु.पूनम बहन तथा अन्य भाई-बहनें शामिल हुए।

रीवा-देव तालाब(म.प्र.)। विधानसभा अध्यक्ष गिरीश गौतम को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.लता बहन।

प्रशासकों, प्रबंधकों व कार्यपालकों हेतु राज्यस्तरीय अभियान

प्रशासन में निजी स्वार्थ का स्थान नहीं होना चाहिए : राज्यपाल

भोपाल-म.प्र.। अभियान के उद्घाटन समारोह में उपस्थित होकर अंतर की गहराई से प्रसन्नता महसूस हो रही है। ऐसे विषयों पर कार्यक्रम की बहुत आवश्यकता है एवं इसका भविष्य में बहुत लाभ होता है। विद्या दूसरों को देने से बढ़ती है। उक्त

राज्यपाल ने पाँच अभियानों का किया शुभारंभ

पहला, भोपाल से सिंगरौली
दूसरा भोपाल से बैतूल
तीसरा भोपाल से शिवपुरी
चौथा भोपाल से ग्वालियर
पाँचवा भोपाल से मुरैना

विचार ब्रह्माकुमारीज़ के राजयोग भवन में प्रशासकों, प्रबंधकों तथा कार्यपालकों हेतु राज्यस्तरीय अभियान का शुभारंभ करते हुए राज्यपाल मंगूभाई पटेल ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि इस संसार में केवल मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जिसे जुबान मिली हुई है। इसलिए जुबान से अच्छे ही बोल बोलने चाहिए। प्रशासन में निजी स्वार्थ, लालच, लोभ आदि का स्थान नहीं होना चाहिए। राज्यपाल ने कहा कि व्यक्ति में आत्मीयता का भाव बहुत ज़रूरी है। यहां आकर वह आत्मिक भाव जागृत होता है। साथ ही अपने चंचल मन पर कंट्रोल रखना भी ज़रूरी है जो यहां बखूबी सिखाया जाता है। आपके द्वारा आयोजित यह अभियान बहुत सफल होगा ऐसी मेरी शुभकामना है।

माउण्ट आबू से संस्थान के प्रशासक प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब्र.कु. हरीश भाई ने कहा कि अच्छा प्रशासक वह जो अपने ऊपर प्रशासन कर सके, अपनी कर्मेन्द्रियों पर प्रशासन कर सके। प्रशासक में डिसिप्लिन, निःस्वार्थ भाव एवं ट्रस्टपीपन जैसे गुणों का होना भी आवश्यक है। दादी प्रकाशमणि जी कहती थीं कि मैं स्व की प्रशासक हूँ। कर्म ज़रूर करना है लेकिन कर्म का सन्यास नहीं करना है।

ब्रह्माकुमारीज़ भोपाल ज़ोन की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. अवधेश दीदी ने शब्दों से सभी का स्वागत करते हुए कहा कि प्रशासन में उत्कृष्टता लाने के लिए आध्यात्मिकता की आवश्यकता है और राज्यपाल पटेल जी इस क्षेत्र में विशेष हैं। आपने सेवा भावना से विरोधियों को हर बार जवाब दिया है। कार्यक्रम संचालन ब्रह्माकुमारीज़ गुलमोहर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. डॉ. रीना दीदी ने किया। साथ ही उन्होंने सभी को राजयोग मेडिटेशन की गहन अनुभूति कराई।

मातृशक्ति की गरिमा व प्रतिष्ठा की पुनर्स्थापना से बनेगा स्वर्णिम भारत - विजयवर्गीय

इंदौर-म.प्र.। समाज में फैली बुराइयों ने मनुष्य के संस्कारों को विकृत कर दिया है। भारत को स्वर्णिम भारत बनाने के लिए नारी के प्रति सम्मान और मातृशक्ति की प्रतिष्ठा पुनः स्थापित करनी होगी। उक्त विचार भाजपा के वरिष्ठ नेता और राष्ट्रीय महासचिव कैलाश विजयवर्गीय ने ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान शिखर स्थित ओमप्रकाश भाई जी सभागृह में महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि भारत की दैवी संस्कृति में नारी का बहुत सम्मान था। अब मनुष्य के संस्कारों को फिर से उच्च और श्रेष्ठ बनाना है। आत्म विवेचन और आत्म चिंतन से ही हम सुसंस्कारित होंगे। संस्थान के इंदौर ज़ोन की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी ने महाशिवरात्रि का महत्व बताते हुए कहा कि वर्तमान समय सृष्टि के महा परिवर्तन का समय है, इस काल को संगम युग कहते हैं। इसमें निराकार ज्योति स्वरूप परमपिता परमात्मा अवतरित होकर आत्मज्ञान और राजयोग से ही मनुष्य के आसुरी स्वभाव और संस्कारों को मिटाकर उन्हें सम्पूर्ण सद्गुणों और दिव्य संस्कारों से युक्त दैवी मानव बना रहे हैं। सांसद शंकर लालवानी ने कहा कि परमात्मा शिव का अवतरण समाज में व्याप्त बुराइयों रूपी विष को समाप्त कर, ज्ञान अमृत का पान कराने के लिए हुआ है। शिव जी की बारात से हमें यह शिक्षा

- वर्तमान समय सृष्टि के महापरिवर्तन का समय है, इसी को संगम युग कहते हैं
- महाशिवरात्रि पर्व परमात्म अवतरण का यादगार

मिलती है कि हमें प्रकृति और समाज में सब प्रकार के लोगों के साथ सद्भाव से रहना है। महापौर पुष्यमित्र भार्गव ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था समाज के हर क्षेत्र में बुराइयों को मिटाकर दिव्य संस्कारों को धारण कराने का प्रेरणास्पद कार्य कर रही है। प्रेमनगर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शशि दीदी ने सभी को श्रेष्ठ प्रतिज्ञा कराई। इस अवसर पर शिव संदेश सद्भावना शोभायात्रा निकाली गई जिसका शुभारंभ कैलाश विजयवर्गीय ने हरी झंडी दिखाकर किया। कार्यक्रम का सफल संचालन ब्र.कु. अनिता दीदी ने किया।

महाशिवरात्रि पर बनाये विश्व के सबसे बड़े...

ग्रीटिंग कार्ड को देखने के लिए शहर में उमड़ा जन सैलाब

पुणे-बाणेर(महा.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 87वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव पर विश्व के सबसे बड़े ग्रीटिंग कार्ड द्वारा महाशिवरात्रि की शुभकामनाएं तथा परमात्म अवतरण का शुभ संदेश दिया गया। इस ग्रीटिंग कार्ड की ऊंचाई 62 फीट और चौड़ाई 46 फीट है। इस ग्रीटिंग कार्ड का उद्घाटन ब्रह्माकुमारीज़ की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी ने किया। इस अवसर पर ब्र.कु. नथमल भाई,कटक, ओमशान्ति मीडिया के संपादक ब्र.कु. गंगाधर भाई,

डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके, युवा नेता बाबाराजे देशमुख, डॉ. ब्र.कु. त्रिवेणी बहन, डॉ. ब्र.कु. सुवर्णा बहन आदि उपस्थित रहे। इस ग्रीटिंग कार्ड को इंडिया स्टार वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में शामिल किया गया है। जिसका सर्टिफिकेट एमटीवी स्प्लिट्सविला एक्स3 के विजेता तथा बिग बॉस मराठी सीज़न3 के विजेता सुप्रसिद्ध अभिनेता जय दुधाने ने अपने हस्तों से राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी, डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके एवं डॉ. ब्र.कु. त्रिवेणी बहन को प्रदान किया।

शिव दर्शन आध्यात्मिक मेला का हज़ारों लोगों ने किया अवलोकन

धमतरी-छ.ग.। 87वीं त्रिमूर्ति शिवजयंती पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय शिव दर्शन आध्यात्मिक मेले के प्रथम दिन "वर्तमान समय शिव जयंती का अद्वितीय महत्व" विषय पर आयोजित परिचर्चा में विधायिका रंजना साहू ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ के कार्यक्रम में शामिल होकर जब यहाँ से जाते हैं तो एक नई ऊर्जा के साथ जाते हैं, पॉज़िटिव एनर्जी लेकर जाते हैं।

पूर्व विधायक गुरुमुख सिंह होरा ने कहा कि बाबा के आशीर्वाद से हम सभी यहाँ शांति से रह रहे हैं, बाहर दुनिया में स्थिति कितनी खराब है। ऐसे कार्यक्रमों से हमें

एनर्जी मिलती है। विपिन साहू,सहकारिता एवं दुग्ध महासंघ बोर्ड छ.ग. ने कहा कि यहाँ हम शांति की ओर खुद को चलाने का प्रयास करते हैं। सूर्यप्रभा चेटियर अध्यक्ष,जिला महिला कांग्रेस ने कहा कि इस विश्वविद्यालय में शांति और प्रेम है। यहां की ज्ञान सरिता में हम बहते जा रहे हैं और पावन बनकर अपने लक्ष्य पर पहुँचेंगे। ब्र.कु. सरिता दीदी ने कहा कि अभी से 87 वर्ष पूर्व श्रीमद् भागवत् गीता में उच्चारे महावाक्य 'यदा-यदा हि धर्मस्य' के वायदे अनुसार परमात्मा शिव अधर्म का विनाश और एक सत्य धर्म की स्थापना करने धरा पर अवतरित हो चुके हैं। मंच संचालन में गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में नाम दर्ज कराने के बाद कामिनी कौशिक को ब्र.कु. सरिता दीदी ने सम्मानित किया। इस अवसर पर दीपक लखोटिया,संपादक एवं मालिक प्रखर समाचार पत्र, श्याम अग्रवाल, उद्योगपति एवं समाजसेवी सहित बड़ी संख्या में शहर के लोग मौजूद रहे।

'शिव दर्शन' मेला में विशेष...

100फीट एरिया में भारत के नक्शे में दर्शाया 12 ज्योतिर्लिंगम रहा आकर्षण का केंद्र

होलोग्राफिक शिवलिंग द्वारा शिव की महिमा का हुआ चित्रण

40 फीट शिवलिंग के दर्शन से सभी हुए अभिभूत

वैल्यूज़ गेम्स द्वारा बच्चों को नैतिक मूल्यों की मिली शिक्षा

भगवान शिव के बहुत सुंदर और रचनात्मक मॉडल बनाकर लाये बच्चे

इस मौके पर शहर में शोभायात्रा निकाल कर दिया गया परमात्म संदेश

RNI NO RAJHIN/2000/00721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/21-23, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2021-23, Posting on 12th TO 14th and 22nd TO 24th each month, published on 3rd March, 2023
स्वामी - राजयोगा एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन, प्रकाशक, सम्पादक एवं मुद्रक- गंगाधर नरसिंघानी द्वारा डी.बी. कॉर्प.लि. भास्कर प्रिन्टिंग प्रेस,शिवदासपुरा, टोंक रोड,जयपुर से मुद्रित एवं ओमशान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़,शांतिवन-राज. से प्रकाशित।
कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया ब्रह्माकुमारीज़, शांतिवन,- 307510
See Latest News
www.omshantimedia.org